3:1-16

मसीह का पुनरागमन

पतरस ने स्पष्ट किया कि उसका संदेश एकदम नया नहीं है। प्रेरित के संदेश के द्वारा उसके पाठकों ने उद्धार प्राप्त किया था। जिन कलीसियाओं को उसने संबोधित किया था वे सच्चाई जानती थीं; बल्कि वे उसमें बनी हुई थीं (1:12)। उसके पश्चात् झूठे उपदेशक/शिक्षक आए। उन्होंने कलीसिया के दो फाड़ कर दिए। कुछ मसीहियों ने इसको स्वीकार किया या कम से कम उनको बर्दाश्त किया; अन्य लोगों ने स्पष्ट रूप से उनके उपदेशों/शिक्षाओं के उद्देश्य को समझा और उनका तिरस्कार किया। इस पत्री के लिखे जाने के पीछे प्रेरित के दो उद्देश्य थे: (1) वह अपने पाठकों को समझाना चाहता था कि झूठे उपदेशक/शिक्षक उनका शोषण कर रहे हैं। इससे भी बढ़कर, वे प्रेरितों के संदेशों के साथ एक सीमा से अधिक समझौता कर रहे थे। (2) वह अपने पाठकों को उनके सामर्थ और बुलाहट की पवित्रता का स्मरण दिलाकर उत्साहित करना चाहता था। वह उन्हें विश्वास में आगे बढ़ाना चाहता था। पतरस ने स्पष्ट किया कि उसके पास कोई नया, उन्नतिशील संदेश नहीं है। उसका उद्देश्य उन्हें स्मरण दिलाना था और उनकी आत्मिक उत्तेजना को जगाना था। यदि उन्हें परमेश्वर के लोगों के समान उन्नति करनी है तो यह आवश्यक था कि वे झूठे उपदेशकों/शिक्षकों का तिरस्कार करें और जो संदेश उन्होंने प्रेरितों से सुना था उस पर अपना समर्पण दोहराएं।

"अपने शुद्ध मन को उभारना" (3:1, 2)

[1]हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूँ, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ, [2]कि तुम उन बातों को जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से कही हैं, और प्रभु और उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी।

आयत 1. प्रियो शब्द सम्बोधन की भाषा में परिवर्तन लाता है। पत्री में झूठे उपदेशकों/शिक्षकों को सख्त झिड़की देने के बाद मैत्रीपूर्ण उत्साहवर्धन शब्दों का वर्णन पाया जाता है। संक्षिप्त में, प्रेरित ने इस बात का जिक्र किया है कि यह उसकी **दूसरी पत्री** है जो उसने इन पाठकों को लिखी थी। जिस प्रकार कैनन के अनुसार नये नियम के पुस्तकों को व्यवस्थित किया गया है, उससे आधुनिक पाठक पतरस की पहली पत्री के संदर्भ में 1 पतरस के बारे में सोचता है। प्रथम पाठकों को इन दोनों पत्रियों की इस प्रकार के संबंधता के बारे में अधिक

जानकारी नहीं थी। वे कुछ पृष्ठ पीछे पलटकर 1 पतरस नहीं पा सकते थे। इस पर और अधिक रोशनी डालने के बाद यह पता चलता है कि आधुनिक पाठक भी इस बात से अधिक आश्वस्त नहीं है कि जिस पत्री के बारे में प्रेरित ने बातें की हैं वह 1 पतरस ही था। हम जो कुछ यहाँ कह सकते हैं वह यह है कि पतरस ने इन पाठकों को पहले भी एक पत्री लिखी थी। (अधिक जानकारी के लिए, देखें *परिचय*, पृष्ठ 11-15.)

प्रेरित ने कहा कि पहली पत्री की भांति इस पत्री, 2 पतरस, का उद्देश्य **सुधि दिलाकर तुम्हारे** [पाठकों के] **शुद्ध मन को उभारना** है। दूसरा पतरस में, उसने अपने पाठकों को यीशु के साथ अपने व्यक्तिगत् संबंध के बारे में स्मरण दिलाया है। उसने उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि प्रभु अपने लोगों से ऐसा जीवन चाहता है जो कामुकता मुक्त हो। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि झूठे उपदेशकों/शिक्षकों, जो कलीसिया में घुस आए थे, को अपनाने का परिणाम वे भुगतेंगे।

अच्छे आत्मिक अगुवे के समान, पतरस ने स्पष्ट किया कि वह अपने सब पाठकों को एक ही रंग में नहीं रंग रहा था। उनमें से अधिकांश सतर्क थे। उन्होंने झूठे शिक्षकों का विरोध किया; वे अपने पाप क्षमा के प्रति विश्वासयोग्य थे। पतरस उन्हें उत्साहित करना चाहता था। पतरस की अपने पाठकों को स्मरण दिलाने की इच्छा 1:12 का संस्मरण कराती है। प्रेरित को नाजुक संतुलित क्रिया का निष्पादन करना था। एक ओर तो वह झूठे उपदेशकों/शिक्षकों पर दोषारोपण करना चाहता था लेकिन दूसरी ओर वह अपने पाठकों की बुद्धिमता या ईमानदारी का अपमान नहीं करना चाहता था।

इस अनुच्छेद और 1:12 में अंतर्निहित आलोचना पाई जाती है। उसके पाठकों को प्रेरितों द्वारा दिए गए संदेशों के बारे में स्मरण दिलाना आवश्यक था। उसने उनकी भर्त्सना को यह समझकर कम किया कि वे सत्य में बने हुए हैं (1:12) और उनका "मन निष्कपट" था। जो आत्मिक अगुआ बनने की चाह रखते हैं वे प्रेरित के इस व्यवहार के द्वारा महत्वपूर्ण पाठ सीख सकते हैं। आँखें मूंदकर निंदा करने से वांछित अंत प्रभावित नहीं होता है। इस विषय पर स्पष्ट होना आवश्यक है और सच्चाई के लिए खड़े रहना है, लेकिन वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए किसी भी व्यक्ति का व्यक्तिगत् व्यवहार, एक बड़ा योगदान होता है।

आयत 2. पतरस अपने पाठकों को झूठे उपदेशकों/शिक्षकों के उपदेश और उनके प्रथम मसीही उपदेशकों/शिक्षकों के संदेश के मध्य भिन्नता समझा रहा है। वह उनको यह मानने के लिए विवश कर रहा था कि वे **उन बातों को जो ... पहले से कही हैं, स्मरण रखें**। जो बात उन्होंने सबसे पहले प्राप्त किया था, वह परमेश्वर का संदेश था जिसे उसने उन्हें **पवित्र भविष्यवक्ताओं** के द्वारा दिया था। पहले ही पतरस ने यह स्पष्ट कर दिया था कि पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को बोलने के लिए प्रेरित किया (1:21)। इसके साथ ही, जो संदेश उन्होंने प्रेरितों के द्वारा सुना था वह "पवित्र भविष्यवक्ताओं" के द्वारा दिए गए संदेश की पूर्णता थी। डॉनाल्ड गथरी के अवलोकनानुसार, "भविष्यवक्ताओं

की भविष्यवाणी को यीशु की आज्ञाओं से जोड़ना यह दिखाता है कि आधिकारिक मसीही शिक्षा का अभ्युदय की प्रक्रिया, जिसको [पुराने नियम] के समानांतर रखा जा सकता है, पहले ही प्रारंभ हो चुकी थी।"[1]

यद्यपि इस आयत में पतरस की यूनानी भाषा अटपटी सी है, लेकिन इसका अर्थ स्पष्ट है। अक्षरशः वह कहता है कि भविष्यवक्ताओं के द्वारा जो शब्द पहले कहे गए थे वे "उद्धारकर्ता की उस आज्ञा [के अनुसार] ... , जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी" है। इसका आशय यह है जबकि पतरस के पाठकों ने प्रेरितों के द्वारा आज्ञा सुनी थी, वह वास्तव में, प्रभु और उद्धारकर्ता की आज्ञा थी। दूसरी संभावना यह है कि ये आज्ञाएं प्रेरितों की ओर से था। इसके लिए, प्रभु और उद्धारकर्ता ने प्रेरितों को चुना और भेजा। कैसा भी कहा जाए, इस संदर्भ में दोनों व्याख्याएं सटीक बैठती हैं और यह एक दूसरे से भिन्न नहीं है।

पतरस ने प्रेरितों की पहचान, **तुम्हारे प्रेरित** करके की है। उन प्रेरितों की कोई बुरी मंशा नहीं थी। उन्होंने मसीहियों को सौदे बाजी की वस्तु नहीं समझा; विश्वासियों का फायदा उठाकर उन्होंने कोई भी निजी लाभ नहीं कमाया। मसीह की महिमा और दूसरों का उद्धार छोड़कर प्रेरितों ने और कोई दूसरा कार्य नहीं किया। वे "तुम्हारे प्रेरित" थे। यदि आवश्यक हो तो पतरस, प्रेरितों के अधिकार का उपयोग करता परंतु अभी इस घड़ी के लिए यह समस्या नहीं है। इस समय, वह अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाना चाहता था कि प्रेरितों ने उनसे प्रेम किया है और उनकी सेवा की है। दूसरी ओर, झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने केवल उनका उपयोग लाभ के लिए ही किया है और उनका शोषण किया है (2:3, 15)। फिर भी, अधिकार का विषय अप्रासंगिक नहीं है। झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने इस पत्री के पाठकों के सम्मुख जिस प्रकार का उपदेश और आचरण रखा था उसका विरोध भविष्यवक्ताओं के अधिकार, प्रेरितों की आज्ञा और यीशु की आज्ञाओं से उसने किया।

जब सच्चाई का मामला था तो झूठे उपदेशकों/शिक्षकों के दयनीय नैतिक जीवन को अस्थाई रूप से अलग रखा जा सकता है। मसीहियों को मसीह की सच्चाई, उद्धार के मार्ग की सच्चाई, या उसकी कलीसिया की सच्चाई के बारे में निर्देशन के लिए प्रेरितों की शिक्षाओं पर ध्यान लगाना चाहिए। पतरस ने प्रेरितों की पहचान "तुम्हारे प्रेरित" के रूप में की है क्योंकि उनकी प्राथमिक चिंता विश्वासियों की आत्मिक उन्नति थी। उसने ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित व्यक्तियों द्वारा वस्तुनिष्ठ सच्चाई और प्रेरित और उसके पाठकों के मध्य व्यक्तिगत् परस्पर क्रिया के निवेदन को संयुक्त किया है। मसीही अगुवेपन से व्यक्तिगत् तत्व को अलग नहीं किया जा सकता है। अच्छा चरवाहों के समान, प्रेरितों ने उनसे प्रेम किया और उनकी देखभाल की।

वे प्रेरित कौन थे जिन्होंने उनको आज्ञा दी थी? प्रथम दृष्टि में, वे प्रथम बारह शिष्य थे, जिनको प्रभु ने चुना और सुसमाचार प्रचार के लिए भेजा। उन बारहों ने अन्य लोगों को सिखाया और उन्हें सुसमाचार प्रचार के लिए भेजा।[2] संभवतः पतरस के पाठकों को जिन्होंने पहले प्रचार किया था या तो वे बारहों में से कोई

था या फिर उनके द्वारा किसी को नियुक्त किया हुआ उपदेशक था। उपदेश/शिक्षा प्रेरित के द्वारा दिया गया था वह अधिक महत्वपूर्ण था इसके बजाय कि वे मिशनरी कौन थे जिन्होंने उन्हें पहले यीशु के बारे में बताया था।

"उसके आगमन की प्रतिज्ञा कहाँ गई?" (3:3-7)

3पहले यह जान लो कि अन्तिम दिनों में हँसी ठट्ठा करनेवाले आएँगे जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे 4और कहेंगे, उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था? 5वे तो जान बूझकर यह भूल गए कि परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीन काल से विद्यमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है, 6इसी के कारण उस युग का जगत जल में डूब कर नष्ट हो गया। 7पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि जलाए जाएँ; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।

जबकि पतरस ने झूठे उपदेशकों/शिक्षकों के उपदेश/शिक्षा का अधिक व्याख्यान नहीं किया है, लेकिन यह कहना सुरक्षित होगा कि उन्होंने प्रभु के द्वितीय आगमन के सिद्धांत का इनकार किया था। आरंभिक मिशनरियों ने नये विश्वासियों को आश्वासन दिया था जो प्रभु, पिता के दाहिने ओर राज्य करने के लिए स्वर्ग पर उठा लिया गया था, वह वापस आ रहा है। आगे उन्होंने यह भी कहा कि वह जल्द आ रहा है (याकूब 5:8; 1 पतरस 4:7)। क्योंकि "जल्द" एक संबंध सूचक शब्द है, तो इसमें कोई शक नहीं है कि बहुत से लोगों ने मसीह के पुनरागमन की अपेक्षा कुछ ही वर्षों या कुछ ही दशकों के भीतर की थी। समय बीत चुका था और यीशु अब तक नहीं लौटा था। झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने लोगों की इस आशा का लाभ उठाकर यह घोषणा की कि प्रभु दोबारा नहीं आने वाला है। इसके विपरीत, कुछ लोगों ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि प्रभु आत्मा में लौट चुका है। उदाहरण, उन्होंने यह उपदेश दिया कि व्यक्तिगत् रूप से प्रभु उनके लिए तब लौटा जब उन्होंने बपतिस्मा लिया था। पतरस के उपदेशों में इन में से कोई भी शिक्षा नहीं पाई जाती है। प्रेरित ने स्पष्ट किया कि किसी को भी प्रभु के द्वितीय आगमन के बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार परमेश्वर ने इस संसार का न्याय भूतकाल में किया था, वैसे ही वह फिर से इस संसार का न्याय करेगा।

आयत 3. किसी को भी असावधानी नहीं बरतनी चाहिए क्योंकि झूठे उपदेशक/शिक्षक मसीहियों के मध्य घुस आए हैं। जैसे पौलुस ने दूसरे मसीहियों को चेताया कि झूठे उपदेशक/शिक्षक, मसीहियों के मध्य घुस आएंगे उसी तरह पतरस ने भी अपने पाठकों को चेताया कि झूठे उपदेशक/शिक्षक उनके मध्य प्रकट होंगे (देखें प्रेरितों.20:29-31; 1 तीमुथियुस 4)। अँग्रेजी में यह अनुवाद कि

"mockers [coming] with their mocking" ऐसा लगता है जैसे कि यहाँ शब्दों को दोहराया गया है परंतु इब्रानी भाषा में इस प्रकार का शब्द समूह प्रामाणिक है। यहाँ ऐसा लग रहा है मानो प्रेरित अपनी प्रथम भाषा की व्याकरण को बदल रहे हों।

इस आयत में "ठट्ठा करने वाले," दूसरे अध्याय के झूठे उपदेशक/शिक्षक हैं। उन्होंने प्रेरितों द्वारा दिए गए प्रभु के द्वितीय आगमन संबंधी शिक्षाओं का मजाक उड़ाया और फिर **अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चले**। उनका जीवन पूर्णतया पवित्र जीवन, जो परमेश्वर के लोगों की पहचान है, के विपरीत था। माइकल ग्रीन के अनुसार, "पागलपन और असंयम अक्सर एक साथ पाया जाता है।"[3] जो प्रेरितों द्वारा प्रकट किए गए परमेश्वर के प्रकाशन का सम्मान नहीं करते हैं वे मसीही शिक्षा और नैतिक जीवन में पाप करने की ओर अग्रसर होते हैं।

कोई टिप्पणी किए बिना पतरस ने यह परिकल्पना की कि वह स्वयं और उसके पाठक **अंतिम दिनों** में रह रहे हैं। यदि प्रभु एक हजार वर्ष तक ठहरा रहे तौभी यह मसीहियों के लिए अंतिम दिन था (3:8)। "अंतिम दिनों," जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:1 और इब्रानियों 1:1, 2 में पाया जाता है, प्रभु के प्रथम आगमन (उसके राज्य का आरंभिक अनुभूति) और उसके द्वितीय आगमन (जिसमें न्याय और उसके राज्य की अंतिम अनुभूति होगी) के बीच का संपूर्ण समय व्यक्त करता है। पतरस और अन्य नये नियम के लेखक "अंतिम दिनों" पर अपने विचार को भविष्यवक्ताओं के लेखों पर आधारित करते हैं। यशायाह ने लिखा, "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे" (यशायाह 2:2)। पतरस के मसीही पाठक उस समय रहते थे जिसे देखने के लिए भविष्यवक्ताओं ने संघर्ष किया था; परमेश्वर का भवन सब पर्वतों पर स्थापित किया जाएगा। जिस तरह झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने प्रेरितों के वचनों का उपहास उड़ाया उसी तरह यशायाह के समकालीन लोगों ने भी उसके वचन का उपहास उड़ाया था (यशायाह 28:14, 15)। कि मसीही लोग "अंतिम दिनों" में रह रहे हैं, विचार उनके मिशन के अत्यावश्यक पर जोर देता है और यह उनके सेवा का पूर्वानुमान है।

आयत 4. इसमें कोई आश्चर्य नहीं है जब झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने व्यंगपूर्वक पूछा, **उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई?** उन्होंने विश्वासियों का मजाक उड़ाया, भोला-भाला होने का दोष लगाया और प्रेरितों के शब्दों को यथावत ग्रहण करने का आरोप लगाया। उन्होंने इस ओर इशारा किया, **क्योंकि जब से बाप-दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?** ऋतुओं का बदलना, नई पीढ़ी का उदय होना और वृद्धों का देह त्याग, निरंतर चलने वाली जीवन चक्र की गवाही है। इस प्रकार झूठे उपदेशकों/शिक्षकों का तर्क था। उनका मानना था कि "उसके आने की प्रतिज्ञा" और कुछ नहीं बल्कि उनको धोखा देने के लिए बनाई गई कहानी है।

व्यंग कसना, मानव जाति जितना पुराना है। यह उन लोगों की व्यथा कहती

है जो किसी प्रकार का कानून और व्यवस्था नहीं चाहते हैं। सुलैमान ने निम्न बातों से संघर्ष किया, "जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है" (सभोपदेशक 1:9)। अन्य कुछ स्थानों में विश्वासी और अविश्वासी की स्थिति में विभेद किया गया है: विश्वासी यह मानता है कि संसार अंत की ओर जा रहा है। अविश्वासी यह कहता है कि केवल संयोग और परिस्थिति राज करते हैं। संसार का कुछ भी नहीं होने वाला है। मानव जीवन का कुछ भी अंतिम उद्देश्य नहीं है।

पतरस ने मृत्यु के लिए κοιμάομαι *(कोईमाओमाई)* शब्द प्रयोग किया है जो अपने आप में बहुत रुचिकर है। यह शब्द स्तिफनुस की मृत्यु के लिए भी प्रयोग किया गया है। लूका ने लिखा कि वह "सो गया" (प्रेरितों. 7:60)। पौलुस ने भी मृत्यु के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया है जब उसने लिखा कि "जो सोते हैं" (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। NASB में इसका शाब्दिक अनुवाद पाया जाता है जबकि अन्य अनुवाद इसके लिए "मृत्यु" क्रिया शब्द का प्रयोग करते हैं। स्पष्ट रूप से इस शब्द का यही अर्थ है। अभी भी "सोना" शब्द मृत्यु के लिए एक हल्का शब्द है।

जबकि "सोना/निद्रा" यूनानी-रोमी समाज में एक सामान्य रूपक अलंकार है, लेकिन इसके साथ यह भी सत्य है कि कृत्रिम रोमी साम्राज्य में यह एक गंदा विषय है। प्राचीन काल के प्याले मानव खोपड़ी के आकार के बने थे। इस समय की रोमी कब्र का सामान्य लेख लतीनी अक्षरों "N F F N S N C," अर्थात *Non fui, fui, non sum, non curo* में लिखा जाता था। जब इन शब्दों का अनुवाद किया जाता है तो इसे ऐसे पढ़ते हैं, "मैं नहीं था। मैं था। मैं नहीं हूँ। मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता है।"[4] पतरस के समकालीन लोगों के लिए मृत्यु किस्मत का एक भद्दा खेल है। मसीहियों के लिए, मृत्यु का तात्पर्य सोना है।

कुछ लोग पतरस के शब्दों में दशकों का अंतर देखना चाहते हैं। उनका तर्क है कि जब प्रेरित कहता है कि "बाप-दादे सो गए हैं," तो यह एक अमूर्त विचार नहीं है। वे कहते हैं कि बाप-दादे वे हैं जो प्रथम मसीही समाज में वृद्ध हो गए हैं। सदियाँ बीत चुकी हैं, कई पीढ़ी गुजर गई हैं, और अभी भी प्रभु वापस नहीं लौटा। झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने लंबी अवधि से संजोये जा रहे आशा के साथ खिलवाड़ किया है। इस प्रकार उन्होंने यह व्याख्या प्रस्तुत की है कि 2 पतरस, प्रेरित पतरस के शहीद होने के कई वर्षों उपरांत लिखा गया था। यह व्याख्या कई अन्य कारणों से असफल रही।

इस प्रकार की व्याख्या से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निराशा की अवस्था पैदा करने के लिए कई दशक लग गए होंगे। प्रेरितों का संदेश यह था कि "सब बातों का अंत निकट है" (1 पतरस 4:7)। यह कहना कठिन होगा कि अधिकांश मसीहियों ने "निकट" का क्या अर्थ निकाला होगा। हो सकता है कि कुछ लोगों ने इसका अर्थ यह निकाला होगा कि प्रभु एक या पाँच वर्ष के अंदर ही वापस लौटेगा। दशकों तक उसके वापस लौटने की निराशाजनक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं थी। आरंभिक दिनों में निराशाजनक स्थिति अधिक अनुभव

की गई होगी। झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने मसीहियों की आशा पर यह कहकर पानी फेर दिया था कि आदि से इस दुनिया की बातों में कोई परिवर्तन नहीं आया है। उनके अनुसार "प्रभु का आगमन" जैसी कोई बात नहीं होने वाली है।

झूठे उपदेशक/शिक्षक स्व-घोषित ज्ञान के संरक्षक थे। इस प्रकार वे कहते थे कि प्रभु का वास्तविक द्वितीय आगमन नहीं होगा। इसके साथ ही, उनका ज्ञान, जैसा उनका दावा था, स्वतंत्रता के संदेश को उचित ठहराता था (2:19), व्यवस्था का इनकार करते थे (2:21), और शारीरिक कार्य में व्यस्त रहते थे (2:18)। झूठे उपदेशक/शिक्षक यह समझने में असफल रहे थे कि न्याय के लिए प्रभु यीशु का प्रकट होना मसीही सिद्धांत का कोई उत्तर चिंतन नहीं था। यीशु फिर आएगा एक साहसिक घोषणा है कि मानव इतिहास किसी और दिशा में जा रहा है। जिस प्रकार लोग व्यवहार करते हैं और जो वे विश्वास करते हैं, वह बहुत मायने रखता है क्योंकि परमेश्वर इस संसार को अंतिम न्याय की ओर ले जा रहा है। सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी (मत्ती 25:31-33), और हर एक घुटना झुकेगा (फिलिप्पियों 2:10)। अंत के दिनों का आरंभ, अंतिम दिन जो "प्रभु का दिन" है, में होगा (3:10), जब समय समाप्त हो जाएगा। मसीही विश्वास के हरेक अभिकथन में इस बात का आशय पाया जाता है कि समय का एक आरंभ था और इसका अंत भी होगा। यह कहना कि "सभी बातें वैसे ही हो रहीं हैं जैसा वह था" अविश्वास होगा, जिसकी जड़ भौतिकवाद और आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति में पाया जाता है।

आयत 5. पतरस ने अंत के विषय का तर्क यह कहकर प्रस्तुत किया है कि एक आरंभ था। यह दोनों विचार एक दूसरे से संबंधित हैं। जो भी परमेश्वर ने अस्तित्व में लाया है, उसका वह अंत भी कर सकता है। यीशु के क्रूसीकरण और पुनरुत्थान के साथ ही अंत के दिन का आरंभ हो चुका है। मृतकों में से जी उठे प्रभु अंतिम न्याय के लिए वापस आ रहा है। आरंभ और अंत वास्तविक है क्योंकि परमेश्वर वास्तविक है। जिन लोगों ने न्याय के लिए प्रभु के द्वितीय आगमन का इनकार किया उनके लिए पतरस ने व्यंग्य कसते हुए कहा कि वे तो जान बूझकर यह भूल गए कि परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीन **काल से विद्यमान है**। कहने का तात्पर्य यह है कि वे परमेश्वर के वचन के अनुसार अस्तित्व में आए; और उनका अंत भी परमेश्वर के वचन के अनुसार ही होगा।

जब पतरस ने सृष्टि के बारे में लिखा, तो वह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं और बुद्धिमान लोगों की कुलीन परंपरा में खड़ा था। उसने देवताओं के मध्य किसी भी प्रकार की मिथक लड़ाई का वर्णन नहीं किया है, जिसके फलस्वरूप पृथ्वी पर मानव जाति को स्थान मिला हो। उसने किसी भी प्रकार के विश्लेषण का प्रयास नहीं किया है जिससे आधुनिक वैज्ञानिक संतुष्ट हों। उसने केवल इसके बारे में कहा। प्रेरित ने इसे स्व-प्रमाणित ठहराया कि उत्पत्ति की पुस्तक का विश्लेषण ठीक है। परमेश्वर ने कहा और संसार अस्तित्व में आया। यह विश्वास का वक्तव्य था। वास्तविकता के बारे में सभी अभिकथन, चाहे वे "वैज्ञानिक" हों या किसी अन्य के साथ जोड़े गए हैं, विश्वास के वक्तव्य के साथ प्रारंभ होता है; परंतु

विश्वास के सभी वक्तव्य एक ही क्रम मे नहीं होते हैं।

वैकल्पिक विश्वास का वक्तव्य यह है कि कायनात का आरंभ नहीं है, तत्व अनंत है, तत्व की प्राकृतिक इच्छा और प्रकृति में क्रमानुसार उत्पादन की क्षमता और जीवन की अदभुत संरचना है। विज्ञान और तकनीकी प्रगति के कारण, मानव समाज में असाधारण अहंकार समा गया है – एक ऐसा अहंकार जिसमें परमेश्वर को ढूँढने के प्रति संदेह व्यक्त किया जाता है, जो एक ओर असहनीय है तो दूसरी ओर बड़ा दिलचस्प है। मसीहियों के विश्वास की अभिव्यक्ति संसार और मानव जीवन के अवलोकन पर आधारित है। इसमें परमेश्वर का प्रकृति और उसके वचन में स्वयं का प्रकाशन सम्मिलित है। तो यह उचित कारण है पतरस ने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि जो झूठे उपदेशक/शिक्षक, जो प्रभु के द्वितीय आगमन का इनकार करते हैं, यह भूल गए हैं कि "परमेश्वर के वचन के द्वारा" ही स्वर्ग और पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है।

जबकि इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि पतरस ने कायनात की उत्पत्ति की ओर इंगित करते हुए यह कहा कि इसका अंत भी होगा, इसके लिए उसने जिन शब्दों का प्रयोग किया है वे आश्चर्यचकित करने वाले हैं। पतरस ने घोषणा की कि **पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है**। संभवतः वह जीने के लिए पानी की आवश्यकता के बारे में कुछ भी नहीं कह रहा होगा, यद्यपि उसके शब्दों को ऐसा अनुवाद करने की परीक्षा हमारे समक्ष है। बल्कि पतरस न्याय की विषय वस्तु की ओर अग्रसर हो रहा था। उत्पत्ति का वृतांत मुहावरे की भाषा में आसमान और पृथ्वी के पानी के मध्य अंतर का विश्लेषण करता है। इसके साथ ही यह पृथ्वी के पानी का एक स्थान पर एकत्रित होने का भी विश्लेषण करता है ताकि सूखी भूमि दिखाई दे (उत्पत्ति 1:6-10)। परमेश्वर का पानी पर नियंत्रण, पानी पर उसका अधिकार इत्यादि, सृष्टि के वृतांत के महत्वपूर्ण अंग है। वह परमेश्वर के पानी के प्रबंधन के बारे में स्पष्ट था, पतरस, सृष्टि के पानी के बजाय न्याय के पानी के बारे में अधिक चिंतित था। उसका यह विचार इस विषय पर तब और अधिक स्पष्ट हो जाता है जब उसका विचार इस विषय पर प्रगति करता है।

आयत 6. अपनी इन दोनों संक्षिप्त पत्रियों में पतरस ने पाठकों का ध्यान जल प्रलय की ओर आकर्षित किया है (1 पतरस 3:20; 2 पतरस 2:5; 3:6)। इन तीनों घटनाओं में जल प्रलय यह स्मरण दिलाता है कि जिस प्रकार परमेश्वर के न्याय ने जल प्रलय से पूर्व जगत का अंत किया था, उसी तरह वर्तमान जगत का भी परमेश्वर के न्याय के द्वारा अंत होगा। इस आयत के आरंभिक शब्द इसी के कारण (δι' ὧν, *डी होन*), पाठकों को असमंजस में डालते हैं। क्योंकि यहाँ प्रयुक्त यूनानी सर्वनाम बहुवचन है। स्पष्ट रूप से पतरस का इससे, "इसी कारण" या "इसके द्वारा," से यह तात्पर्य था कि दोनों, परमेश्वर का वचन और पानी के द्वारा **उस युग का जगत जल में डूब कर नष्ट हो गया**। केवल जल प्रलय ने ही जगत को नष्ट नहीं किया परंतु परमेश्वर के वचन ने जगत को नष्ट करने में सकारात्मक भूमिका निभाई थी। प्रेरित ने उन लोगों को, जिन्होंने प्रभु के द्वितीय आगमन का इनकार किया है, स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है। सृष्टिकर्ता ने जगत

का न्याय चुकाया और पानी से इसे नष्ट किया था। जैसे कि निश्चित रूप से उसने भूतकाल में जगत का न्याय चुकाया था, वैसे ही वह फिर इसका न्याय चुकाएगा।

आयत 7. जिस तरह परमेश्वर का वचन, जगत की सृष्टि और जल से इसे नष्ट करने में क्रियान्वयन था, **उसी प्रकार वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि जलाए जाएँ**। यह आयत प्रतिकूल संयोजन (δέ, डे) से प्रारंभ होती है जो इस बात में विभेद करती है कि भूतकाल में कौन सी घटना घटी थी। NASB इसका उचित अनुवाद "**परंतु**" करता है। न्याय के तौर तरीके से देखा जाए तो जल प्रलय पूर्व स्वर्ग और पृथ्वी और वर्तमान पृथ्वी में अधिक अंतर नहीं है। परमेश्वर ने जल प्रलय पूर्व "आकाश और पृथ्वी" का न्याय जल से किया; वर्तमान जगत का न्याय वह आग से करेगा। जिस तरह की पृथ्वी का मनुष्य अनुभव करते हैं, उनके लिए शब्द समूह "आकाश और पृथ्वी" व्यर्थ है। इसलिए, उनके लिए जल प्रलय आकाश पर न्याय है, का प्रश्न अप्रासंगिक है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि सारी सृष्टि परमेश्वर के न्याय के अधीन है।

जल प्रलय पश्चात् परमेश्वर ने नूह को आश्वासन दिया, "जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा" (उत्पत्ति 8:21)। आमतौर पर यहूदी अनुवादक अंतिम शब्दांश (अंग्रेजी अनुवाद) "जैसा मैंने किया" को इस प्रकार समझते हैं कि जल से इस जगत की विनाश लीला नहीं दोहरायी जाएगी। इस बात की प्रतिज्ञा नहीं है कि परमेश्वर कभी भी इस जगत का दोबारा न्याय नहीं करेगा। जल प्रलय के कई वर्ष पश्चात्, व्यवस्थाविवरण के अंत में मूसा के गीत में, परमेश्वर ने व्यवस्थापक के मुँह में अपने शब्द डाले, "क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी, और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म हो जाएगी, और पहाड़ों की नींवों में भी आग लगा देगी" (व्यवस्थाविवरण 32:22)।

नये नियम काल तक यहूदियों में यह सामान्य मत था कि परमेश्वर सम्पूर्ण जगत पर अग्नि द्वारा सार्वभौम न्याय भेजेगा। पौलुस ने अपने पाठकों को पुनः आश्वासन दिया, "उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)। पतरस के लिए भी, परमेश्वर के न्याय का वह दिन होगा जब प्रभु यीशु अग्नि में प्रगट किया जाएगा।

पतरस के पाठक, उसके द्वारा उनके लिए निर्धारित योग्यताओं को मानने से नहीं चूक सकते थे। सभी लोगों का अग्नि से न्याय नहीं किया जाएगा,केवल दुष्टों का अग्नि के द्वारा न्याय किया जाएगा। **अग्नि द्वारा न्याय का दिन, भक्तिहीन मनुष्यों के लिए नष्ट होने का दिन होगा।** बेशक "भक्तिहीन मनुष्यों" में झूठे उपदेशक/शिक्षक भी होंगे जो यह मांग कर रहे थे कि "उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई?" जिस दिन भक्तिहीन मनुष्यों के लिए नष्ट होने का दिन होगा, उसी दिन उनके लिए जो "उस दिन की बाट किस रीति से जोहते और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करते" (3:12) हैं, के लिए छुटकारे और उद्धार का दिन होगा।

आधुनिक लोगों, मसीही और गैर-मसीहियों ने, प्रलय के दिन के परिदृश्य को तैयार किया है जिसका तात्पर्य जगत का अंत हो सकता है। संभवतः पृथ्वी के गर्भ से ज्वालामुखी फूट सकता है और जीवन नाश हो सकता है, या युद्ध में परमाणु हथियारों का प्रयोग होने पर जीवन समाप्त हो सकता है। हो सकता है कि एक विशालकाय उल्का पिंड पृथ्वी से टकरा जाये और जीवन नाश हो जाये। हमारे वैज्ञानिकी चमत्कार के कारण, आधुनिक लोग सभी चीजों के अंत की परिकल्पना कर सकते हैं। यहाँ तक कि अविश्वासियों के लिए भी पृथ्वी डरावना और अनिश्चितता का स्थान है। बाइबल स्पष्ट करती हैः जब अंत का दिन आएगा तो यह कोई अकस्मात घटना नहीं होगी। परमेश्वर जैसा चाहता है वैसे ही वह इस जगत का अंत करेगा, जब वह अपने पुत्र को दोबारा भेजेगा। तब न्याय और अनंतता का आरंभ होगा।

"प्रभु का दिन" (3:8-10)

8हे प्रियो, यह बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है। 9प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। 10परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे।

"उसके आने की प्रतिज्ञा," "भक्तिहीन मनुष्यों का न्याय और नाश होने के दिन," "प्रभु का दिन," और इसके समतुल्य अन्य वाक्यांश, एक ही घटना की ओर इंगित करते हैं। ठट्ठा करने वालों को संदेह हुआ होगा कि प्रभु मानव जाति का न्याय चुकाएगा, परंतु पतरस ने उन्हें स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है। जिसकी उसने सृष्टि की है वह उसका न्याय भी करेगा। इसके साथ ही, प्रेरित ने जल प्रलय पूर्व युग का स्मरण दिलाया जहाँ लोगों ने ठट्ठा किया था। जिस तरह परमेश्वर का न्याय उस संदेह भरे जगत में आया, वैसे ही उसका न्याय इस संदेह करने वाले जगत में भी आएगा। जो लोग उसके आने की देरी से सकते में थे, तो पतरस ने उन्हें अन्य बातों पर विचार करने के लिए कहा। उसका उद्देश्य अपने पाठकों को यह आश्वासन देना था कि जो प्रेरितों ने प्रतिज्ञा की थी वह पूरी होगी। जो प्रभु परमेश्वर के दाहिने ओर स्वर्ग पर है, वह दोबारा आएगा। जब वह ऐसा करेगा, तो वह मानव जाति का न्यायी और धार्मिकता का समर्थक होगा।

आयत 8. परमेश्वर के न्याय में विलंब होने के कारण भविष्यवक्ताओं ने भी अपने समकालीन लोगों की आलोचना सही थी। परमेश्वर का शीघ्र न्याय करने की घोषणा के कारण यिर्मयाह को दोषी ठहराया गया था, लोगों ने उसके व्यक्तिगत् कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के आरोप में उस पर विष उगला था।

भविष्यवक्ता को पता था कि उसका संदेश परमेश्वर की ओर से है, परंतु वह उसके विलंब करने पर सकते में था। परमेश्वर को संबोधित करते हुए उसने शिकायत की, "सुन, वे मुझ से कहते हैं, यहोवा का वचन कहाँ रहा? वह अभी पूरा हो जाए! परन्तु तू मेरा हाल जानता है, मैं ने तेरे पीछे चलते हुए उतावली कर के चरवाहे का काम नहीं छोड़ा; न मैं ने उस आने वाली विपत्ति के दिन की लालसा की है; जो कुछ मैं बोला वह तुझ पर प्रगट था" (यिर्मयाह 17:15, 16)। पतरस के समान, यिर्मयाह भी यह बताने में असमर्थ था कि प्रभु कब न्याय चुकाएगा, लेकिन उसके न्याय के बारे में उसको कोई संदेह नहीं था।

पतरस ने यिर्मयाह के समान कोई शिकायत नहीं की। बल्कि, उसने पाठकों के साथ तर्क वितर्क किया। न्याय में विलंब और इस युग के विनाशकारी अंत का क्या तात्पर्य है? क्या इसका तात्पर्य, जैसे उसके विरोधियों ने कहा, कि कोई "प्रभु का दिन" नहीं है? पतरस ने यह कहकर न्याय में विलंब का प्रत्युत्तर दिया कि "विलंब" एक संबंधित शब्द है। "विलंब" का अर्थ क्या है जब मनुष्य इसके बारे में बोलते हैं, जो समय को अपनी हृदय गति समझते हैं, तो उसका संबंध जैसा "विलंब" परमेश्वर समय के बारे में समझता है, से कुछ लेना देना नहीं है। प्रेरित ने अपने विरोधियों का इन शब्दों से सामना किया, **यह बात तुम से छिपी न रहे**। प्रेरित ने अपने लेख में जो एकलौता उल्लेखित भजन, उस पर लिखे शीर्षक के अनुसार जो मूसा द्वारा लिखा गया था, से एक अनुच्छेद उद्धृत किया है। "क्योंकि हज़ार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं जैसा कल का दिन जो बीत गया, या जैसे रात का एक पहर" (भजन 90:4)। इस विचार के आधार पर पतरस ने कहा, **प्रभु के यहाँ एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है।**

इस्राएल का महान परमेश्वर पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है। वह अब्राहम, याकूब, मूसा, शमूएल, दाऊद, यशायाह और यीशु नासरी का परमेश्वर है। एक मसीही गीत है जिसमें स्वर्ग के बारे में इस प्रकार गाया गया है "वे समय को वर्षों में नहीं गिनते हैं।"[5] पतरस ने कहा कि ऐसा लग सकता है कि परमेश्वर ने उसके पुनरागमन में बहुत देरी कर दी है, परंतु लोगों को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर समय को वैसा नहीं समझता है जैसा मनुष्य समझते हैं। उसके लिए एक हजार वर्ष, एक लाख वर्ष मानो ऐसा है जैसा एक दिन या एक घंटा। यह परमेश्वर की सृष्टि के लिए अपरिहार्य है, कि उस पर समय के क्षणभंगुर अवधारणा को मजबूर करने की कोशिश की जा जाए, जिससे मानव जाति बंधी हुई है।

पतरस ने प्रभु के साथ एक दिन की तुलना हजार वर्ष से सहूलियत की दृष्टि से की। वह यह भी कह सकता था कि प्रभु के लिए एक लाख वर्ष या दस लाख वर्ष एक दिन के बराबर है। फिर भी, आरंभिक मसीही सदियों में इस आयत का उपयोग यह बताने के लिए किया गया था कि मसीही लोग, मसीह के साथ यरूशलेम नगर से एक हजार वर्ष तक राज्य करेंगे। कुछ लोग, जैसे द्वितीय सदी के आयरेनियुस, ने इस अनुच्छेद में एक प्रतिज्ञा देखी कि जगत सात हजार वर्ष तक रहेगा, सृष्टि के प्रत्येक दिन के लिए एक हजार वर्ष।[6] अंतिम हजार वर्ष वह

समय होगा जब प्रभु अपने संतों के साथ इस पृथ्वी पर राज्य करेगा। यह सिद्धांत, जैसे कि यह सामान्य रूपांतर के साथ सहस्र वर्षीय सिद्धांत जाना जाता है, सदियों तक इसकी मान्यता है। इस सिद्धांत ने बिशप ऊस्शर को भी प्रभावित किया जिन्होंने सृष्टि की तिथि ई.पू. 4004 निर्धारित की थी; जो कुछ समय पहले तक बाइबल के हासिए में भी छपा जा रहा था। इस सिद्धांत ने आधुनिक पूर्व सहस्र वर्षीय और समयों और कालों को सुव्यवस्थित करने वाले व्यवस्थापकों को भी प्रभावित किया है। पतरस ने इन विश्वासियों की अटकलबाजियों की ओर अपने सिद्धांत को समर्पित नहीं किया था। वह यह बताने में संतुष्ट था कि प्रभु अपने नियुक्त समय में ही वापस आएगा। जब वह ऐसा करेगा तब न्याय और अनंतता प्रारंभ हो जाएगा।

आयत 9. झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने प्रभु के आगमन में देरी होने का यह प्रमाण दिया कि वह नहीं आएगा। प्रेरित ने उसके आगमन में हो रहे विलंब के लिए एक और तर्क प्रस्तुत किया हैः परमेश्वर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है। नये नियम का त्वरित पूर्णकालिक और उत्तर कालिक संरक्षित साहित्य यह दर्शाता है कि प्रभु के न्याय में विलंब यहूदियों के मध्य बहुधा चिंता का विषय बना हुआ था। धर्मी इसका अनुमोदन करते थे। प्रभु क्यों विलंब कर रहा है? पतरस ने इसका उत्तर निडरता पूर्वक दिया, **प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं**। परमेश्वर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य कर रहा है। वह चाहता है कि "सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें" (1 तीमुथियुस 2:4)। इस कारण वह न्याय करने में विलंब कर रहा है। परमेश्वर अज्ञानियों और बलवा करने वालों को एक समान समय प्रदान कर रहा है ताकि वे यीशु की गवाही सुनें, पश्चाताप करें और उसकी आज्ञा मानें। "परमेश्वर का धैर्य मध्यांतर जैसा है, जो एक अवकाश का समय है, जबकि न्याय अभी टाल दिया गया है और पश्चाताप करने का अंतिम अवसर प्रदान किया गया है।"[7]

यीशु के मारे जाने से पहले, उसने स्वयं अपने पुनरागमन के बारे में कहा, परंतु उसने यह चेतावनी दी कि उसके आगमन के ठोस दिन या घड़ी का कोई अंदाजा न लगाए। इस बात को बलपूर्वक कहने के लिए, यीशु ने कहा, "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता" (मत्ती 24:36)। यीशु अपने शिष्यों को अंतिम समय के बारे में शिक्षा देने में अति सावधानी बरत रहा था। मत्ती 24 अध्याय के अंतिम भाग और मत्ती 25 अध्याय में, यीशु ने कई ऐसे दृष्टांत दिए जो उसके आगमन और न्याय से संबंधित थे। उसका आगमन अचानक होगा। जब लोग अपनी दैनिक दिनचर्या में होंगे, तो: शादी ब्याह करेंगे, खेतों में कार्य करेंगे, चक्की चलाते होंगे (मत्ती 24:37-41)।

यीशु का पुनरागमन और मानव जाति का न्याय, बहुतों को आश्चर्य में डाल देगा क्योंकि वे उसके आगमन में विलंब करने की आशा करते होंगे। वे उस भण्डारी के समान होंगे जिसको उसके स्वामी की सम्पत्ति की देखभाल करने की

जिम्मेदारी सौंपी गई थी। भण्डारी ने स्वामी के लौटने में विलंब करने की अपेक्षा की। उसने अपने संगी दासों का अपमान किया और स्वामी की सम्पत्ति को अपना लिया। अपेक्षा से पहले ही स्वामी अचानक प्रकट हुआ। इस भण्डारी का "भाग कपटियों संग ठहराया" (मत्ती 24:51)।

दूसरों की प्रतीक्षा भिन्न होगी। उसके आगमन में विलंब होने का आकलन करने के बजाय वे उसके आगमन के दिनों की गणना करेंगे। यदि वह उनकी समय सारिणी का अनुमोदन नहीं करता है तो उनका विश्वास शिथिल हो जाएगा। और वे सांसारिकता में लौट जाएंगे। यीशु ने अपनी चेतावनी को स्पष्ट करने के लिए, दस कुँवारियों का दृष्टांत बताया जो दूल्हे के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वे उसके विलंब करने की अपेक्षा नहीं कर रहीं थीं और उनका विश्वास इसके लिए तैयार भी नहीं था (मत्ती 25:1-13)। कुछ लोगों के लिए प्रभु उनकी अपेक्षा से पहले ही लौट आएगा; जबकि अन्य लोगों के लिए उनकी अपेक्षा के बाद लौटेगा। यीशु चाहता था कि जब भी वह प्रकट हो उसके अनुयायी तैयार रहें। उसने उन्हें किसी भी प्रकार का आकलन करने से निराश किया।

नये नियम में यीशु के शिष्य कहीं भी प्रभु के द्वितीय आगमन के समय का आकलन नहीं करते हैं। इस आशा के साथ जीवन जीया जाता है कि यह घटना जल्द घटने वाली है। चाहे उसके आगमन में जल्दी हो या फिर विलंब, विश्वासियों को उसके लिए तैयार रहना चाहिए। फिर भी, लोगों का अनुमान ठीक नहीं ठहरता है। प्राचीन या आधुनिक मसीही सम्प्रदाय दानियेल, यहेजकेल, या प्रकाशितवाक्य के दर्शनों का रहस्योद्घाटन करने में कभी नहीं थके। सिस्टम सामने आ रहे हैं, समय सारिणी की गणना की जा रही है, और संसार को यह संदेश दिया जा रहा है कि किसी दिन प्रभु वापस आएगा। लोग श्वेत वस्त्र धारण किए आसमान की ओर आँखें गड़ाए छतों पर खड़े हैं। दिन आते और जाते हैं, और प्रभु अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगा है।

पतरस ने कहा कि प्रभु वापस आएगा। मसीहियों को इसी प्रतीक्षा में जीवन यापन करना है। परमेश्वर अकेले ही जानता है। **वह नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।** फिर भी, उसकी पवित्रता को अनदेखा नहीं करना चाहिए। जब उसका धैर्य समाप्त हो जाएगा, और मनुष्यों के पापों घड़ा भर जाएगा, तब प्रभु न्याय करेगा। "क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए (2 कुरिंथियों 5:10)।

आयत 10. संयोजन सूचक परंतु, यूनानी क्रिया "आ जाएगा" (ἥξει, *हेखेई*), संदेह वादियों और संदेह करने वालों को बिना किसी गलती के चेतावनी प्रस्तुत करता है। पतरस का संदेश बिल्कुल स्पष्ट हैः कोई गलती न करे, प्रभु का दिन आ जाएगा। चाहे वह हजार वर्ष पश्चात् या दिन निकलते ही आए, न्याय का होना तो निश्चित है। **प्रभु के दिन** की पृष्ठभूमि पुराने नियम में पाई जाती है। भविष्यवक्ताओं के अनुसार यह वह दिन है जब परमेश्वर या तो इस्राएलियों को

स्वतंत्र करने के लिए या अन्य जातियों को दण्ड देने के लिए सामर्थ के साथ कार्य करेगा।

जिन्होंने परमेश्वर के चुने हुए लोगों को नुकसान पहुँचाया है, या फिर जानबूझकर उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया है, उनके लिए "प्रभु का दिन" भय, दुःख भरा और अंधकारपूर्ण दिन होगा। परमेश्वर का दबा क्रोध भड़क उठेगा। "हाय-हाय करो, क्योंकि यहोवा का दिन समीप है; वह सर्वशक्तिमान की ओर से मानो सत्यानाश करने के लिये आता है" (यशायाह 13:6; देखें सपन्याह 1:14-16)। आमोस के अनुसार प्रभु का दिन" एक ऐसा दिन होगा जब परमेश्वर इस्राएल के शत्रुओं पर अपना क्रोध उडेलेगा। यह छुटकारे का दिन होगा। भविष्यवक्ता ने यूँ कहा, हाय तुम पर, जो यहोवा के दिन की अभिलाषा करते हो! यहोवा के दिन से तुम्हारा क्या लाभ होगा? वह जो उजियाले का नहीं, अन्धियारे का दिन होगा (आमोस 5:18)।

नये नियम में पुराने नियम की अपेक्षा "प्रभु के दिन" के बारे में अधिक सकारात्मक विचार पाया जाता है। यह तो निश्चित है कि यह अभी भी क्रोध और न्याय का दिन होगा; परंतु यह वह दिन भी होगा जिसमें परमेश्वर के लोग निर्दोष ठहराए जाएंगे, तब प्रभु की उपस्थिति में उन्हें शांति और विश्राम मिलेगा। इससे भी बढ़कर, "प्रभु का दिन" वह दिन होगा जिसमें यीशु मसीह आकाश में, जब वह न्याय करने के लिए दोबारा आएगा, प्रगट होगा।

लूका 17:22-37 में लिखे, यरूशलेम पर न्याय और जगत के अंतिम न्याय के मध्य कुछ जटिलता दिखाई देती है, परंतु "प्रभु के दिन" की अवधारणा को पूरे अनुच्छेद में देखा जा सकता हैः "वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा" (17:24), "वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा" (17:26), "उस दिन" (17:31)। पौलुस ने लिखा, "क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा" (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। पतरस के अनुसार, "प्रभु का दिन" वह दिन होगा जब इस जगत की समय व्यवस्था पर विश्राम लगेगा। उस दिन, यीशु सभी पीढ़ियों के लोगों का न्याय चुकाएगा। धरती, इसकी वर्तमान अवस्था में नहीं पाया जाएगा। **उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।**

यीशु, प्रभु और न्यायी होकर अचानक प्रकट होगा। किसी विशेष दिन या घड़ी के बारे में और कोई अग्रिम चेतावनी नहीं दी जाएगी। यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि वह दोबारा चोर की नाई आएगा (मत्ती 24:43)। पौलुस ने भी 1 थिस्सलुनीकियों 5:2 में चोर का अलंकार प्रस्तुत किया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में चोर का अलंकार पाया जाता है (प्रकाशितवाक्य 3:3; 16:15)। पतरस के अनुसार भी प्रभु चोर की नाई आएगा। **जैसे चोर** सेंध लगाने के लिए अग्रिम सूचना जारी नहीं करता है, वैसे ही यीशु भी कोई सूचना नहीं देगा। चोर से सुरक्षित रहने के लिए हर समय सतर्क रहने की आवश्यकता है। वैसे ही परमेश्वर के लोगों को जब भी वह आए, उनको उसके लिए तैयार रहना चाहिए। पूरे नये नियम में, प्रभु कब आएगा या उसके वापस लौटने के ठीक-ठीक चिह्न क्या हैं, के

बारे में बहुत अधिक अनुमान नहीं लगाया गया है। अंत के समय की शिक्षा नैतिकता पर अधिक जोर देती है। यह जानकर कि वह वापस आएगा, यह चेतावनी दी गई है और भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए उत्साहित किया गया है।

दसवीं आयत का अंतिम भाग नये नियम की सबसे कठिन साहित्यिक समस्या प्रस्तुत करती है। कुछ प्राचीन हस्तलिपि में यह इस प्रकार पाया जाता है, **पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे** (κατακαήσεται, *काटाकाएसेटाई*)। जब अन्य प्रतियों का शाब्दिक अनुवाद किया जाता है तो यह इस प्रकार पढ़ा जाता है, "पृथ्वी और इसके कार्य स्थापित किए जाएंगे" (εὑρεθήσεται, *ह्यूरेथेसेटाई*)। साहित्यिक प्रमाण भी बराबर बंटा हुआ है। NASB और KJV में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है, "जलाया जाएगा" ("will be burned up")। द न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन के अनुसार "ढूँढ़ लिया जाएगा" ("will be discovered") अनुवाद किया गया है। इस शिक्षा के समर्थन में कि निकट भविष्य में, अधिकांश उद्धार पाए हुए, नवीनीकृत पृथ्वी पर रहेंगे।

चाहे हम इसको "जला दिया जाएगा" या "स्थापित लिया जाएगा" पढ़ें, पाठकों को इस वाक्यांश का आशय, जिसका प्रयोग पतरस ने किया है, समझने के लिए इसके संदर्भ में जाना होगा। संदर्भ के अनुसार आकाश हट जाएंगे, और तत्व अत्यधिक तापमान के कारण पिघल जाएंगे। यदि हम इसको "स्थापित किया जाएगा" पढ़ें तो इस शब्द का तात्पर्य संदर्भ के आधार पर ही निश्चित किया जाना चाहिए। इसी तरह NIV संदर्भ के अनुसार इसका अनुवाद करता है, "पृथ्वी और जो कुछ इसमें है उघाड़ा जाएगा" ("The earth and everything in it will be laid bare")। यदि "स्थापित करना" ("found") उचित अनुवाद है, तो बेशक पतरस का इससे यह तात्पर्य निकलता हैः "ढूँढ लिया गया," "उघाड़ा गया," या "अनावृत किया गया।" प्रेरित का अर्थ स्पष्ट है। जब प्रभु वापस आएगा तो पृथ्वी और जो कुछ इसमें है, नष्ट किया जाएगा।

प्रभु के दिन के संदर्भ में पवित्र जीवन जीना (3:11-13)

[11]जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए, [12]और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। [13]पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।

पतरस ने प्रभु के द्वितीय आगमन का वर्णन आलसी जिज्ञासा जगाने के लिए नहीं किया है। कि प्रभु कब लौटेगा इसके विषय अनुमान लगाना अर्थहीन है। समय के परिक्षेत्र और परिस्थिति में सीमित होने के कारण, मसीही लोग जिस प्रकार परमेश्वर, मसीह के पुनरागमन और उसके पश्चात् होने वाले न्याय के बारे

में समझता है, वैसा वे नहीं समझ सकते हैं। उसके लोगों को इतना जानना पर्याप्त है कि वह क्या करने वाला है, न कि वह कब और कैसा करेगा। इसके बजाय कि वे इस बात का अनुमान लगाएं कि परमेश्वर जगत का अंत कैसे करेगा, पतरस इसके अर्थ की महत्वपूर्णता की ओर लोगों का ध्यान खींचने में संतुष्ट था। यदि यह जगत परमेश्वर के न्याय के सामर्थ के अधीन है, यदि यीशु मानव जाति का न्याय करने के लिए दोबारा आ रहा है और जगत को नष्ट करेगा तो मसीहियों को इन आने वाली घटनाओं के परिदृश्य में अपना जीवन बिताना होगा। जब प्रभु के आगमन के दृष्टिकोण से जीवन जीया जाता है तो जीवन का आनंद कुछ और ही होता है। जब विश्वासी उसके आगमन की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते हैं तो वे पवित्र और भला जीवन व्यतीत करते हैं। इन आयतों में पतरस का यही परिदृश्य है।

आयत 11. प्रेरित का आलंकारिक प्रश्न, **तुम्हें कैसे मनुष्य होना चाहिए**, इस बात का निष्कर्ष कि, **ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली हैं**, पर आधारित है। यह चुनौती, चाहे वे मसीही हों या फिर न हों, सभी लोगों के लिए उचित है। यह समझने के लिए किसी प्रकार की प्रतिभा की आवश्यकता नहीं है कि पृथ्वी की चमक अस्थाई है। कोई भी जितना धन एकत्रित कर ले वह यहीं पर धरा रह जाएगा। कोई भी किसी चीज का निर्माण क्यों न कर ले उसकी शोभा जाती रहेगी। यदि हमें परमेश्वर पर विश्वास न भी हो, तो यह सोचकर कि कभी भी अंत नहीं आएगा, किसी के लिए भी अपने घर को सजाना संवारना व्यर्थ है। अविश्वासी के लिए, केवल मातम होगा, यह निराशाजनक विश्वास होगा कि मानव जीवन आग की कीड़ा या बोना बग से अधिक कुछ न होगा। जो शारीरिक सुख का आनंद उठाता है वह उसका आनंद उठाए किंतु, एक दिन वह भी मर जाएगा। इसके विपरीत, बाइबल का संदेश यह है कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं और क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं, वे परमेश्वर के उत्तरदायी हैं। यदि कायनात परमेश्वर की सृष्टि है, तो परमेश्वर ही इसके भविष्य को निर्धारित कर सकता है और करेगा।

परमेश्वर का अंत के दिनों के बारे में प्रकाशन देने का उद्देश्य किसी आलसी जिज्ञासा को संतुष्ट करना नहीं है; बल्कि यह तो भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। परमेश्वर की सच्चाई, जिसने बाइबल में अपने आपको प्रकट किया है से यह तथ्य निकाला जा सकता है कि मनुष्य के व्यवहार में परमेश्वर का चरित्र प्रतिबिंब होनी चाहिए। इसके केन्द्र में, केवल दो नैतिक प्रणाली है जिसकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित होता है। प्रथम, यह कि मानव जाति कायनात में आकस्मिक घटना का परिणाम है जिसका मस्तिष्क, उद्देश्य और दिशा निर्देशन नहीं है। ऐसी स्थिति में, नैतिकता जहरीला कानून और घातक पंजा है। जो भी सबसे बड़े क्लब का संचालन करता है, वही सही है।

केवल एक और नैतिक प्रणाली जो उचित प्रतीत होती है उसका आधार परमेश्वर के अस्तित्व में निहित है। यह इस बात की घोषणा करती है कि, परमेश्वर के कारण "सही" का मूल तत्व विद्यमान है। जीवन को निर्देशित करने

हेतु ऐसे नियम मौजूद हैं जो उनके विषय में उचित होने को दर्शाते हैं। नैतिक शास्त्र "परमेश्वर के अनुग्रह और भलाई के प्रति उसके लोगों का प्रत्युत्तर है।"[8] रॉबर्ट डेविडसन ने ठीक ही कहा है:

> नोट करने के लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि चूँकि हम परमेश्वर के बारे में जानते हैं तो लोगों से एक निश्चित आज्ञाकारिता, एक निश्चित तरीके की जीवन जीने की मांग की जाती है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की प्रकाशित की गई चरित्र के साथ नैतिकता का घनिष्ठ संबंध पाया जाता है।[9]

मसीही जीवन का सतत् प्रयास **पवित्र चाल चलन और भक्ति** है। "पवित्र चाल चलन" (ἀναστροφή, *अनास्ट्रोफे)* का तात्पर्य जान बूझकर चुने गए सिद्धांतों का पालन करना है। पतरस के लिए, योग्य जीवन का मार्गदर्शन करने का एकमात्र सिद्धांत, परमेश्वर के द्वारा दिए गए सिद्धांत में पाया जाता है। "पवित्र चाल चलन" एक ऐसा जीवन है जो परमेश्वर को महिमा देता है क्योंकि यह परमेश्वर के चरित्र और अस्तित्व का प्रतिबिंब है। पतरस के शब्द "भक्ति" (εὐσέβεια, *यूसेबेईया)* भयानक, शांत, विस्मय इत्यादि इंगित करता है जिसमें विश्वास का जीवन शामिल है। इस संदर्भ में, यह विशेष रूप से जीवन के क्रम को संदर्भित करता है जो परमेश्वर का उसके कायनात शासन पर निर्भर है।

आयत 12. यदि यीशु के शिष्यों को **परमेश्वर का दिन** ठीक कब आएगा, की गणना करने में थोड़ी भी रूचि होती तो इस दिन के आने की उदासीनता का मामला ही नहीं होता। तब यह भय का दिन नहीं बल्कि उस दिन के आने की प्रतीक्षा करने का दिन होता। मसीही लोग उस दिन की बाट जोह रहे हैं और उसके जल्द आने के लिए यत्न कर रहे हैं। पतरस चाहता था कि मसीही लोग उस दिन के आने के विचारों को अपने मस्तिष्क में ताजा रखें। उन्हें इस पर सोच विचार करते रहना चाहिए, इसके अर्थ पर विचार करना चाहिए, और उसके अनुसार उन्हें अपने जीवन को संवारना चाहिए। भजनों और भविष्यवक्ताओं में, बुद्धिमान लोग प्रभु की बाट जोहते हुए देखे जा सकते हैं। वे जानते थे कि वह अपने समय और तरीके से कार्य करेगा। बुद्धिमान लोग यह जानकर संतुष्ट थे कि इस संसार में फैले अन्याय और बुराई का अंत होगा। "मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके वचन पर है; पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, हाँ, पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, उस से भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूँ" (भजन 130:5, 6)।

इससे पहले पतरस ने यह कहा था कि परमेश्वर न्याय करने में देरी कर रहा है क्योंकि वह धीरज धरता है, और नहीं चाहता है कि कोई नष्ट हो वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले (3:9)। मन फिराव और भक्तिपूर्ण जीवन जीने के द्वारा मसीही लोग अपने आपको और संसार "प्रभु के दिन" के लिए तैयार हो सकेगा। स्पष्ट रूप से, परमेश्वर मनुष्य के व्यवहार के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। कुछ सीमा तक परमेश्वर का अंत के दिनों का न्याय मनुष्य की स्वतंत्रता के अभ्यास के प्रति प्रतिक्रिया होगी। जब प्रभु आएगा, जब वह न्याय

चुकाएगा, तो यह इस संसार की आत्मिक स्थिति द्वारा निर्धारित होगा। पतरस ने बताया कि प्रभु तब लौटेगा जब वह संसार को मन फिराव का पर्याप्त समय दे चुका होगा और जब मसीही लोग अपने आपको उसके आगमन के लिए तैयार कर चुके होंगे। इस प्रकार विश्वासी लोग "उसके जल्द आने के लिये यत्न करके" परमेश्वर की महिमा में योगदान कर सकते हैं।

जब पतरस ने "प्रभु के दिन" के बजाय "परमेश्वर का दिन" लिखा तो यह अनपेक्षित था, परंतु कोई ऐसा सुझाव भी नहीं प्रस्तुत किया जा सकता है कि इससे उसका कुछ और ही तात्पर्य था। शब्द अनपेक्षित है। इस कारण हमें इस पर और अधिक ध्यान देना होगा। आमतौर पर उसके "आने के लिए" (παρουσία, *परुसिया)* शब्द, यीशु के लिए कर्ता कारक के रूप में प्रयोग किया गया है। निस्संदेह, "परमेश्वर के दिन का आना " और 3:4 में वर्णित "उसके आने की प्रतिज्ञा" एक ही घटना की ओर संकेत करते हैं।

सैद्धांतिक रूप से, कई ऐसी बातें हैं जो यह बताती है कि पृथ्वी का अंत होगा। एक विशाल ग्रह पृथ्वी से टकरा सकता है और सभी प्राणियों का विनाश कर सकता है। मनुष्य ने पर्याप्त मात्रा में परमाणु अस्त्रों का निर्माण कर लिया है जो कि उसके स्वयं विनाश के लिए जिम्मेदार होंगे। बीमारियां, बदलते मौसम की अवस्था, या अन्य प्राकृतिक आपदाओं का जमघट, मानव जीवन समाप्त कर सकते हैं। पतरस ने स्पष्ट किया कि संसार का अंत निरपेक्ष भाग्य का परिणाम नहीं होगा। जब अंत आएगा तो यह न्याय का व्यक्तिगत् कार्य होगा। जब मनुष्य का समय समाप्त होगा तो यह इसलिए होगा क्योंकि परमेश्वर इसको अंत करेगा।

जब "परमेश्वर का दिन" आएगा, तो जिसके कारण **आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे।** 3:7 में वर्णित "आकाश और पृथ्वी" इस आयत में वर्णित "आकाश" और "आकाश के गण" के समतुल्य हैं। पतरस के शब्दों का आशय यह है कि किसी को भी पाप के साथ नहीं खेलना चाहिए। एक व्यक्ति अपना जीवन कैसे बिताता है यह एक गम्भीर विषय है। परमेश्वर एक प्रेमी पिता है; लेकिन वह एक "भस्म करने वाली आग" भी है (व्यवस्थाविवरण 4:24; इब्रानियों 12:29)। वह आँख मूँदकर अन्याय, हिंसा, अत्याचार, या संसार की कोई भी बुराई का अनदेखा नहीं करता है।

आयत 13. यशायाह के द्वारा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, "क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ; और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी" (यशायाह 65:17)। भविष्यवक्ता इस्राएल की पुनर्निर्माण के बारे में बातें कर रहा है। पतरस ने इन शब्दों को यशायाह लिया, जो उसने उद्धार पाए हुओं के अनंत जीवन विषय में कहा। प्रेरित यह कह सकता था कि **नया आकाश और नई पृथ्वी** उसकी योजना के अनुसार होगा। संभवतः पतरस यशायाह की भविष्यवाणी की ओर इंगित कर रहा था। दूसरी संभावना यह है कि वह किसी अज्ञात प्रतिज्ञा का जिक्र कर रहा था जिसे यीशु ने अपने शिष्यों को दी होगी। विकल्प में, पवित्र आत्मा ने पतरस को नया आकाश और नई पृथ्वी के बारे में प्रकाशन दिया होगा।

नये आकाश और नई पृथ्वी, असीमित कल्पनाओं का संदर्भ रहा है। इससे पहले यशायाह ने एक ऐसा शांतिपूर्ण दृश्य प्रस्तुत किया है जिसमें भेड़िया, मेमना, सिंह, और बछड़े एक साथ देखे जा सकते हैं (यशायाह 11:6)। क्या हमें इस दृश्य को वास्तविक नया आकाश और नई पृथ्वी के विवरण के रूप में देखना चाहिए? पतमुस की बंधुआई से यूहन्ना ने लिखा, "फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी" (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

प्रेरित किसकी ओर इशारा कर रहे थे? क्या नई पृथ्वी यही ग्रह होगी जिसमें अभी लोग रहते हैं? क्या वर्तमान ग्रह परमेश्वर के लोगों के अनंतकाल के निवास के लिए किसी प्रकार नवीनीकरण किया जाएगा? ताकि यह उनके अनंतकाल के विश्राम के लिए ठहराया जा सके? संभवतः नहीं। फिर भी, ध्यान देने वाली बात यह है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते हुए देखा" गया है (प्रकाशितवाक्य 21:2)। नया यरूशलेम, जो छुड़ाये हुओं के अनंत निवास स्थान के रूप में देखा जाता है, ऐसा प्रतीत होता है कि वह पृथ्वी पर उतर रहा है। हालाँकि, यह अनिश्चित है, और इस बात से सावधान रहना चाहिए कि हम कितना शाब्दिक रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करते हैं।

पतरस ने पहले ही वर्तमान युग और आने वाले युग के मध्य स्वच्छन्द अलगाव का दावा प्रस्तुत किया है। उसने लिखा, "आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे" (3:10)। क्या प्रेरित अब यह कह रहा है कि नये और पुराने के मध्य अभी भी कोई संबंध होगा? क्या स्वर्ग का पृथ्वी-जैसा अस्तित्व होगा, परंतु पाप और दुख के बिना जो वर्तमान में मानव जाति को पीड़ित करता है? यह एक संभावना है, परंतु शायद पतरस ऐसी कोई बात नहीं कहना चाहता होगा। संभवतः वह विश्वासियों को यह आश्वासन देना चाहता था कि परमेश्वर ने उनके लिए अपने साथ अनंतकाल तक निवास करने के लिए कोई योजना बनाई होगी। संभवतः "नये आकाश और नई पृथ्वी" का तात्पर्य यह है कि उद्धार पाए हुए अन्यत्र रहेंगे। अनंत जीवन धूमिल, दुःख भरा निवास स्थान नहीं है जहाँ कोई रोशनी या खुशी न हो। परमेश्वर ने वहाँ सब व्यवस्था की है। अनंतता का अस्तित्व, जिसके बारे में पतरस ने आश्वासन दिया है, के बारे में इसके अलावा और कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।

यत्न करने के लिए आह्वान (3:14-16)

[14]इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो, तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो, [15]और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। [16]वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी

इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।

जब वह इस पत्री का समापन कर रहा था तो पतरस ने अपने मसीही मित्रों से भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए यत्न करने का आग्रह किया। मसीह को अंगीकार करना एक बात है जबकि उसके लिए विश्वासयोग्य जीवन जीना दूसरी बात है। प्रेरित को उसके पाठकों के आत्मिक जीवन के विषय में दो बातों की चिंता थी। पहली बात, शारीरिक अभिलाषा उन लोगों के लिए भी एक बड़ी चुनौती थी जिन्होंने ऐसे अभ्यास को त्यागा था। शरीर की लालसा का सामना करना तब और भी अधिक कठिन हो गया था जब झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने दैहिक कार्य को आत्मिक आशीष के साथ समावेश किया था। पतरस के पाठक उस शिक्षा से प्रभावित हो रहे थे जिन्होंने यह माना कि किसी का भी परमेश्वर के साथ संबंध उनके शारीरिक कार्यों से प्रभावित नहीं होता है। प्रेरित ने तर्क दिया कि इस प्रकार का व्यवहार, उन्हें परमेश्वर से दूर करेगा।

कलीसिया, पापांगीकार करने वाला समुदाय है। मसीही लोग एक सामान्य विश्वास से बंधे हुए हैं। व्यवहार, विश्वास के द्वारा जकड़ा हुआ है। पतरस का दूसरा चिंता का विषय यह था कि झूठे उपदेशक/शिक्षक मसीहियों के विश्वास को नष्ट कर रहे थे। मसीही सिद्धांत व्यवहार का अभिन्न अंग है। मसीही सिद्धांत की यह मान्यता है कि प्रभु यीशु मसीह "उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा" (इब्रानियों 9:28)। परमेश्वर द्वारा पवित्र जीवन जीने की मांग का आश्वासन इस बात से होता है कि जैसे यीशु शरीर में एक बार प्रकट हुआ था, वैसे ही वह दोबारा न्याय के लिए प्रकट होगा। पत्री समाप्त करते समय यही विचार पतरस अपने पाठकों के साथ छोड़ना चाहता था।

आयत 14. प्रेरित ने, अपना प्रेम संगी विश्वासियों के प्रति व्यक्त करने के लिए उन्हें प्रिय करके संबोधित किया है। इस अध्याय में उसने इस शब्द का प्रयोग चार बार किया है (3:1, 8, 14, 17)। ऐसा लगता है कि पतरस ने इस प्रेम भरे शब्द का प्रयोग इस आशय से किया होगा ताकि वह इस बात को स्पष्ट करे कि उसका शिक्षा देना उन पर दोष लगाना नहीं था। वह इस बात की ओर संकेत नहीं कर रहा था कि वे निष्कलंक और निर्दोष जीवन जीने में विफल रहे हैं। वह उनके संकल्प को पुनः संगठित कर रहा था, उन्हें स्मरण दिलाकर उनके मस्तिष्क को जागृत कर रहा था (3:1)। मसीहियों को उनके प्रभु का अनुकरण करते हुए जीवन जीना चाहिए था। पहला पतरस 1:19 में पतरस ने यीशु के लहू का जिक्र करते हुए यह कहा कि प्रभु एक "निर्दोष और निष्कलंक" (ἀμώμου καὶ ἀσπίλου, *अमोमू काई आस्पीलू)* मेमने जैसा था और इन्हीं शब्दों का प्रयोग उसने इस आयत में पवित्र जीवन जीने के लिए आग्रह करने के लिए किया है।[10] जो यीशु का नाम अपनाते हैं वे उसके उदाहरण के द्वारा भक्तिपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

मसीही धर्मविज्ञान अलंघनीय मसीही व्यवहार से बंधा हुआ है। यह अंगीकार करना कि यीशु ही मसीह है, जिसने देहधारण किया, इस बात को अंगीकार करना है कि मानव जीवन का गौरव और प्रतिष्ठा है। इस्राएलियों को मूसा के शब्द, पतरस के शब्दों से अलग नहीं थे। व्यवस्था देने वाला कहता है, "इसलिये आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं" (व्यवस्थाविवरण 4:39)।

मूसा और पतरस दोनों के लिए, मानव इतिहास, भौतिक कायनात, पहिए का दांता नहीं था, जो दुर्घटना वश अस्तित्व में आया, और जिसका अंत सोच रहित घटना में होगा। हरेक व्यक्ति विशेष की नैतिकता का महत्व है। यह इसलिए महत्व रखता है क्योंकि जो ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी में परमेश्वर है वह "नये आकाश और नई पृथ्वी बना रहा है जिसमें धर्मी वास करेंगे।" पवित्र लोग बनने का उलाहना इसलिए प्रभावकारी है क्योंकि तुम इन बातों की आस देखते हो। अंत के दिनों की शिक्षा मसीही सिद्धांत का आवश्यक लक्षण है। इतिहास और समय चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ रहा है। कोई भी जो यीशु को प्रभु करके स्वीकार करता है वह अपने नैतिक जीवन को हल्के में नहीं ले सकता है। इस कारण पतरस ने निर्देश दिया, **तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो।**

शब्दांश "शान्ति से" दुर्घटना वश यहाँ पर प्रयोग नहीं किया गया है। केवल इसी स्थान पर ही इस पत्री में इस शब्द का प्रयोग किया गया है। जब प्रभु लौटेगा, तो पतरस की अपने और अपने पाठकों के लिए यही आशा है कि वे परमेश्वर के सामने पाप रहित पाए जाएं। "शान्ति से" का तात्पर्य "उद्धार पाओ" है या फिर इससे भी बढ़कर है। परमेश्वर के साथ शान्ति, भाइयों एवं बहनों के साथ शान्ति का परिणाम है। मसीह में एक व्यक्ति कलीसिया में शान्ति, और इस पृथ्वी पर उसके राज्य का अनुभव से आने वाले नये आकाश और नई पृथ्वी की शान्ति के अनुभव की ओर बढ़ता है।

आयत 15. यहाँ तक कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं उन्हें भी उसके कार्य पूरा होने में, जिसे वह अपने अच्छे समय पर पूरा करेगा, की प्रतीक्षा करने में बड़ी कठिनाई होती है। इसी बात का लाभ झूठे उपदेशकों/शिक्षकों ने उठाया। "उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई?" उन्होंने पूछा (3:4)। झूठे उपदेशकों/शिक्षकों की व्याख्या यह थी कि प्रेरिताई संदेश गलत था। वह आने वाला नहीं था, कम से कम वह सदेह तो नहीं आने वाला था। पतरस की व्याख्या इससे अलग थी। प्रेरित ने कहा कि यदि परमेश्वर देरी कर रहा था तो वह इसलिए ऐसा करता है क्योंकि "तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (3:9)। उसने इस विचार को 14 आयत में आगे बढ़ाया। पतरस ने कहा कि मसीहियों को हरेक दिन जो प्रभु के आगमन बिना गुजरता है, के लिए परमेश्वर की ओर धन्यवादित हृदय के साथ देखना चाहिए। यदि न्याय और अनंतता में

विलंब भी होता है तो इसके लिए भी उन्हें धन्यवादित रहने की आवश्यकता है। उसका देरी का तात्पर्य यह है कि उसका धीरज अभी भी कार्य कर रहा है। विश्वासी लोग **प्रभु के धीरज को उद्धार समझें**। इसका यह अर्थ हुआ कि अधिक से अधिक लोगों के "उद्धार" के लिए परमेश्वर उन्हें पश्चाताप करने का अवसर प्रदान कर रहा है। जब "उसका आगमन" अनुभव किया जाएगा, तब "उद्धार" का दरवाजा बंद कर दिया जाएगा।

इस संदर्भ में, पतरस ने पौलुस की लिखी पत्रियों का उल्लेख किया। पौलुस को छोड़कर नये नियम में यही एक मात्र स्थान है जिस में पौलुस को पत्रियों का लेखक माना गया है। यह विशेष महत्व रखता है क्योंकि प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस प्रकार का कोई संदर्भ नहीं दिया गया है। कलीसिया के इतिहास में पौलुस की पत्रियों का बड़ा महत्व है तो इससे इस बात अनुमान लगाना बड़ा कठिन हो जाता है कि लूका ने आखिर उनका वर्णन क्यों नहीं किया है। कारण कोई भी क्यों न हो, यहाँ, पतरस की द्वितीय पत्री में, नये नियम में पौलुस के पत्रियों की पौलुस के अलावा अन्य लेखकों ने वर्णन किया है।

यहाँ भी, पतरस द्वारा पौलुस की पत्रियों का उल्लेख मुख्य विचारधारा के लिए प्रसंग था। उसकी रूचि उसमें इसलिए थी क्योंकि झूठे उपदेशक/शिक्षक पौलुस की शिक्षाओं को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत कर रहे थे। वह यह स्पष्ट करना चाहता था कि उसने और पौलुस ने एक ही संदेश सुनाया। संभवतः पतरस के शब्दों से तर्कसंगत संदर्भ निकाला जा सकता है जिसमें कैनन के बारे में प्रश्न उठाया जा सकता था, परंतु ऐसी घटना को पतरस के मुख्य सिद्धांत के लिए प्रासंगिक माना जा सकता है।

स्पष्ट रूप से पतरस ने पौलुस की पत्रियों का उल्लेख एक ही कारण के लिए किया थाः उनमें उसने मसीहियों को वही शिक्षा दी थी जो पतरस ने भी दी थी, कि वे "प्रभु के धीरज को उद्धार समझें।" **हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला**, सिखाया जिसे पतरस ने भी सिखाया। कलीसिया के इन दोनों खम्भों के मध्य किसी प्रकार की लड़ाई या मतभेद का कोई संकेत नहीं दिखाई देता है।

पाठकों को इस विषय पर विचार के लिए छोड़ दिया गया है कि पतरस के मन में अपने विचारों का समर्थन करने के लिए पौलुस की पत्रियों में से कौन सा अनुच्छेद उसके मन में रहा होगा। यदि 2 पतरस सन् 60 के मध्य में लिखा गया था, तब पौलुस की अधिकांश पत्रियां तब तक लिखी जा चुकी होगी। फिर भी, हमें यह ज्ञात नहीं है कि इनमें से कौन-कौन सी पत्रियाँ पतरस और उसके पाठक जानते थे। एक संभावना रोमियों की पत्री है जहाँ पौलुस के समान पतरस की मनोभावना दिखाई देती हैः "क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?" (रोमियों 2:4)।

यदि 2 पतरस सन् 40 के दशक के अंत में, जिस प्रकार प्रस्तावना में इस बात का वर्णन किया गया है, लिखी गई थी, तब इसकी संभावनाएं जताई जाती

हैं कि पौलुस की जिन पत्रियों का पतरस ने उल्लेख किया है वे पत्रियां हैं जिनको नये नियम में सम्मिलित नहीं किया गया है। यदि ऐसी बात है तो पौलुस की पत्रियों के कई वक्तव्य हमारी पहुँच से बाहर हैं जो वही वाद-विवाद आगे बढ़ाते हैं जिसको पतरस आगे बढ़ाना चाहता था।

आयत 16. इतना तो निश्चित हैः पौलुस की लिखी पत्रियां थी जिनको व्यक्तिगत् रूप से पतरस और उसके पाठक जानते थे। पतरस, पौलुस को मित्र के रूप में जानते थे। **अपनी सब पत्रियों में** पौलुस ने ये बातें उन कलीसियाओं को लिखीं जिनको पतरस ने भी संबोधित किया था। पतरस और पौलुस झूठे उपदेशकों/शिक्षकों के सम्मुख खड़े थे जो कलीसियाओं को प्रभावित करने का प्रयास कर रहे थे। विशेषकर वे प्रभु के आगमन में विलंब विषय पर एक साथ देखे जा सकते हैं। दोनों ने विलंब के बारे में यह शिक्षा दी कि विलंब का तात्पर्य उन लोगों के लिए "उद्धार" से है जिन्होंने अभी तक पश्चाताप नहीं किया है।

झूठे उपदेशक/शिक्षक, जिनका यह दावा था कि उनको उत्तम ज्ञान प्राप्त है, **अनपढ़ और चंचल** थे। जैसे उन्होंने **पवित्रशास्त्र की अन्य बातों** के साथ किया वैसे ही उन्होंने पौलुस की पत्रियों की कठिन बातों की शिक्षा दी **जिनको समझना कठिन** था और **नाश का कारण बनाते** थे। यह शब्द कि "समझना कठिन था" यूनानी शब्द (δυσνόητος, *दुसनोएटोस)* का अनुवाद है जो नये नियम में केवल यहीं पर प्रयोग किया गया है। नये नियम के अलावा अन्य शास्त्रों में भी यह एक दुर्लभ शब्द है; लेकिन द्वितीय सदी की एक साहित्य *शेफर्ड आफ हरमास,* में एक दर्शन के लिए इसका प्रयोग किया गया है जिसके लिए लेखक को भी समझने और उसका विश्लेषण करने में कठिनाई हुई।[11] जबकि पतरस, ने किसी दर्शन का उल्लेख नहीं किया है, लेकिन उसने स्वीकार किया कि कुछ बातें जिन्हें पौलुस ने लिखा समझने में कठिन थी और विरूपण के लिए अति संवेदनशील थे। कि पौलुस के लेखों में और "पवित्रशास्त्र की अन्य बातों में" जो बातें समझने में कठिन हैं वे इस बात की गवाह हैं कि भाषा में अस्पष्टता है।

सैद्धांतिक रूप से, परमेश्वर अपनी सृष्टि से वार्तालाप करने के लिए मानव भाषा के अलावा कोई अन्य माध्यम भी प्रयोग कर सकता था। वह सीधे मनुष्य के मन में अपना प्रकाशन डाल सकता था। परमेश्वर हमें कोई ऐसे न त्यागे जाने वाले ज्ञान से भी भर सकता था जिससे हमें यह समझ आता कि वह कौन है, अपने लोगों से वह क्या चाहता है, मसीह की महत्वता बता सकता था, और इसी प्रकार की ढेर सारी बातें बता सकता था। संभवतः वह अपने आपको इस प्रकार प्रगट कर सकता था, परंतु इसके बावजूद उसने दूसरे माध्यम का सहारा लिया। परमेश्वर ने मानव भाषा का प्रयोग कर अपने आपको अपने लोगों पर प्रगट किया। जब भाषा माध्यम है, तो यह गलत समझा जा सकता था और समझा जा सकता है। इसके साथ ही, जो चाहे वे इसका विरूपण कर सकते थे।

भाषा की अस्पष्टता के कारण, कुछ लोग सच्चाई जानने से मुँह मोड़ लेते हैं। जो मसीही सिद्धांत से असहज हैं उन्हें मसीही विश्वास की अंगीकार किए जाने वाली भाषा पर ध्यान देना चाहिए। मसीहियत निश्चित अभिकथन के साथ

प्रारंभ और समाप्त होती हैः परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। यीशु मसीह ही मसीह है। यीशु क्रूस पर हमारे लिए मरा। वह उद्धार का स्रोत है। वह वापस आएगा। भाषा अस्पष्ट है, लेकिन यह निराशाजनक तरीके से अस्पष्ट नहीं है। इसके साथ ही, जो बातें "समझने में कठिन" हैं वे वास्तव में कठिन नहीं हैं, ऐसी स्थिति में वह आसानी से नज़र अंदाज कर दिया जाता है। पतरस के शब्द, अप्रत्यक्ष रूप से, विश्वासियों को विद्यार्थी होने के लिए आह्वान देते हैं। कोई भी यह कह सकता है कि विश्वासयोग्य मसीही भी यह कहकर कि "समझने में कठिन है" पल्ला झाड़ देते हैं तो "अनपढ़ और चंचल लोग" वस्तुतः बातों को अपने ही नाश का कारण ठहराकर "खींचतान" कर बिगाड़ देते हैं।

पतरस का वक्तव्य कि झूठे उपदेशक/शिक्षक पौलुस की पत्रियों से "पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींचतान" करते हैं, कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करते हैं। "पवित्रशास्त्र" के लिए यूनानी जातिगत (generic) शब्द (γραφή, *ग्राफे)* प्रयोग किया गया है; जो किसी भी लेख के लिए प्रयोग किया जा सकता है। समय के गुजरने के साथ ही यह तकनीकी शब्द बन गया। सबसे पहले यहूदी, फिर मसीही लोग, अपने प्राचीन ग्रंथों को मनुष्यों की रचना से बढ़कर समझते थे। उनका मानना था कि परमेश्वर की आत्मा परमेश्वर के चुने हुए लोगों में और उनके द्वारा कार्य करता था कि जो उन्होंने लिखा वह परमेश्वर का वचन था, या दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि लेखक परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित थे। संभवतः प्रेरणा का अर्थ यह भी हो सकता है कि लेख पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया है जिससे वचन लोगों के जीवन में ईश्वरीय फल उत्पन्न करता है। "लेख" या "पवित्रशास्त्र" प्रेरणा स्रोत लेख के लिए तकनीकी शब्द बन गया था। भक्त लोगों ने इसको सर्वोपरि रखा, यह समझते हुए कि यह परमेश्वर द्वारा दिया गया है और किसी विशेष संदर्भ में, मानवीय लेखकों के शब्दों के साथ-साथ यह परमेश्वर का वचन है।

नये नियम के अस्तित्व के समय, "पवित्रशास्त्र," आज के मसीहियों की तुलना में अधिक तरल शब्द था। "पवित्रशास्त्र" वह लेख था जो यहूदी आराधनालय या कलीसिया में पढ़े जाने के योग्य था। "पवित्रशास्त्र" की श्रेणी में ठीक-ठीक कौन सी पुस्तकें आती हैं और कौन-कौन सी पुस्तकें नहीं आती हैं, इस बात से कुछ अनिश्चितता जुड़ी हुई है। हालांकि, कौन से लिखित कार्य परमेश्वर की प्रेरणा से थे, इस बात की अनिश्चितता पर समस्या खड़ी हो गई थी। यह किसने निर्णय लिया कि कौन सा प्राचीन दस्तावेज वास्तव में पवित्रशास्त्र था? कौन सी पुस्तकें प्रेरित थी? गुजरते समय के साथ-साथ इस पर आम सहमति बनी। मसीही विश्वास यह है कि उसी परमेश्वर ने जिसने अपने दासों को लिखने के लिए प्रेरित किया था, उसी ने अपने लोगों को एक निश्चित संख्या की पुस्तकें, जो परमेश्वर की ओर से थीं, लिखवाने में सहायता की। वे पुस्तकें जो मानकों पर खरी ठहरती थीं, और जो परमेश्वर के पूर्व विचार से प्रेरित थीं, उन्हें "कैनन" कहा गया।

यीशु के समय में, ऐसा प्रतीत होता है कि इब्रानी बाइबल का कैनन निर्धारित किया जा चुका था (लूका 24:44)। यद्यपि उनको अलग तरीके से

संजोया गया था, लेकिन वे हमारे पुराने नियम की उनतालीस पुस्तकों के समतुल्य थे। इसके विपरीत, कलीसिया की आरंभिक दिनों में, नये नियम की पुस्तकों को लिखने और एकत्रित करने की प्रक्रिया ही चल रही थी। जब पतरस ने पौलुस की पत्रियों को "अन्य पवित्रशास्त्र" की श्रेणी में रखा तो संभवतः इससे उसका तात्पर्य पुराने नियम की पुस्तकों से था। यह अनिश्चित है कि उसके मन में अन्य प्रेरितों के दस्तावेज भी थे या नहीं।

पतरस का मानना था कि पौलुस की पत्रियाँ परमेश्वर की प्रेरित थीं। वे कलीसिया की आधिकारिक पुस्तकें थीं। प्रथम या द्वितीय सदी में पतरस की मृत्यु पश्चात् परमेश्वर की आत्मा ने उसकी कलीसिया में निश्चित संख्या की पुस्तकों का संकलन करने के लिए कार्य किया, जिसमें पौलुस की तेरह और पतरस की दो पत्रियां सम्मिलित थी कि उनको कैनन की श्रेणी में रखा जाये। ये पुस्तकें कलीसिया के लिए आदर्श बन गए थे कि कलीसिया को क्या विश्वास करना चाहिए, कैसे जीना चाहिए और यह कैसा होना चाहिए। समय के गुजरने के साथ ही ये सत्ताईस पुस्तकें नया नियम कहलायी गईं। आधुनिक कलीसिया के लिए पुराने और नये नियम की छियासठ पुस्तकें "पवित्रशास्त्र" कहलायी गईं।

अनुप्रयोग

प्रभु के दिन का जल्द आने का यत्न (3:1-16)

यह कहा गया है कि बाइबल का सारांश निम्न प्रकार से हैः (1) पुराने नियम का प्रसंग यह है कि "कोई आ रहा है।" (2) चारों सुसमाचारों का प्रसंग "कोई यहाँ है।" (3) नये नियम की शेष पुस्तकों का प्रसंग "कोई दोबारा आ रहा है।" जब पतरस ने अपनी दूसरी पत्री लिखी थी तो उस समय कुछ लोग तो एक दशक या उससे भी पुराने मसीही थे। उन्होंने यह समझ लिया था कि प्रभु वापस आएगा। वर्षों बीत चुके थे और जीवन सामान्य रूप से आगे बढ़ता जा रहा था। पतरस ने अपने पाठकों को आश्वासन देते हुए इस पत्री को इस प्रकार समाप्त किया कि जो उन्होंने सुना था वे सत्य हैं: प्रभु वापस आएगा। पतरस इस बात से आश्वस्त होना चाहता था कि उन्होंने इन सिद्धांतों को ठीक-ठीक समझ लिया थाः

1. *नास्तिक और संदेहवादी सदैव उन लोगों का ठट्ठा उड़ायेंगे जो यह कहते हैं कि प्रभु द्वारा नियुक्त समय के अनुसार पृथ्वी अंत की ओर अग्रसर हो रही है।* तो आओ, खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे मसीहियों और गैर मसीहियों के दृष्टिकोण के मध्य एक सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि मसीहियों को मालूम है कि संसार किसी दूसरी दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। यह अंत की ओर अग्रसर हो रहा है, यह एक ऐसा समय होगा जब न्याय किया जाएगा और सभी लोग परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे और अपना-अपना लेखा देंगे (2 कुरिंथियों 5:10)। गैर मसीहियों का विश्वास है कि जो वे प्रकृति में भौतिक प्रक्रिया के रूप में देख रहे हैं उससे बढ़कर कुछ भी नहीं है। सब कुछ स्वतः हो

रहा है। संसार का एक बड़े धमाके या ठिनठिनाहट के साथ अंत हो सकता है; लेकिन यह कब होगा, उनके लिए कोई मायने नहीं रखता है। गैर मसीही लोगों के लिए, मानव जीवन और भौतिक संसार एक तरह का आकाशीय दुर्घटना है। इसकी कोई रूपरेखा नहीं है और न ही कोई योजना है। उनके लिए, जैसे पौलुस ने कहा, कि लोग कहेंगे "तो आओ, खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो [वे] मर ही जाएंगे" (1 कुरिंथियों 15:32)। फिर भी गलती नहीं करते हैं। यह ऐसा नहीं है कि मसीही लोगों का "विश्वास अंधा" है और संदेह करने वालों को कोई विश्वास नहीं है। गैर मसीही लोग अपने संदेह पर अपनी अनंतता का जोखिम उठाते हैं। मसीही लोग यह मानते हैं कि परमेश्वर ने अपने आपको प्रकट किया है। इतना ही नहीं, उनके विश्वास करने का कारण यह है कि वे यह मानते हैं कि परमेश्वर उनका उद्धार करने के लिए यीशु मसीह में इस पृथ्वी पर आया। हमेशा ही संसार में संदेह करने वाले पाए जाएंगे जो इस विश्वास का ठट्ठा करेंगे। पतरस चाहता था कि उसके पाठक यह जानें कि इस बात की अपेक्षा की जा सकती है। संदेह और ठट्ठा इस सत्य को नहीं बदल सकती है कि यीशु मृतकों में से जी उठा है और पिता के दाहिने हाथ राज्य करता है। यह इस आश्वासन को भी नहीं बदल सकता है कि वह दोबारा आएगा।

2. *परमेश्वर का धीरज धरने का इतिहास है; परंतु अंत में, वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा।* पतरस ने मसीही लोगों का ध्यान जल प्रलय की ओर आकर्षित किया। पतरस ने अपने दोनों संक्षिप्त पत्रियों में नूह का तीन बार उल्लेख किया (1 पतरस 3:20; 2 पतरस 2:5; 3:5, 6)। हरेक घटना में प्रेरित ने बताया कि परमेश्वर ने जगत को पाप के लिए जिम्मेदार ठहराया। आखिरी घटना में (3:5, 6) उसने विश्वासियों को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ने एक दिन न्याय की घोषणा की और अगले ही दिन उसको पूरा नहीं किया। नूह ने संसार को दोषी ठहराया और "धर्म का वारिस" बना (इब्रानियों 11:7)। संसार ने उस पर ध्यान नहीं दिया। वर्ष बीत गए, लेकिन अंत में परमेश्वर ने जिस न्याय की घोषणा की थी, उसका न्याय चुकाया।

पतरस कई और उदाहरण बता सकता था। यिर्मयाह ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दशकों तक चेताया कि परमेश्वर देश का न्याय करेगा। कुछ लोगों ने सुना। लोगों के पास पश्चाताप करने का पर्याप्त अवसर था। लेकिन उन्होंने भविष्यवक्ता का ठट्ठा किया। यिर्मयाह निराश हुआ और उनको छोड़ देना चाहता था (यिर्मयाह 20:7)। अंत में, परमेश्वर ने लोगों का न्याय किया। यरूशलेम नष्ट हो गया; लोग या तो मारे गए या फिर बंधुआई में चले गए। परमेश्वर लोगों के प्रति धीरज धरता है, लेकिन उसकी प्रतिज्ञाएं निश्चित पूरी होंगी।

3. *मनुष्य की सभी धूमधाम और महिमा का परमेश्वर न्याय करेगा।* गैर मसीहियों के पास यह अजीब असंगति पाई जाती हैः सर्वप्रथम, वे मानते हैं कि मानव जीवन एक जैविक, विकास वाद की कड़ी का अंत से बढ़कर कुछ भी नहीं है। मनुष्य होने का अर्थ झींगुर या ओरेंगउटेन से बढ़कर नहीं है। तार्किक रूप से, एक व्यक्ति की मृत्यु खेत में मरे हुए चूहे से बढ़कर नहीं है। एक वस्तुनिष्ठ

पर्यवेक्षक यह तर्क कर सकता है कि एक गैर मसीही की पूर्व धारणा के अनुसार, मानव जाति इस ग्रह पर एक बीमारी है, जो पर्यावरण की परिस्थिति को बिगाड़ती है और जीवन के दूसरे रूपों को नष्ट करती है।

यदि गैर मसीही अपने तर्कों में ठीक हैं, तो कोई भी यह समझ सकता है कि उनका अंजाम कैसा होगा। फिर भी वही गैर मसीही, जो इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मानव जीवन कुछ भी नहीं है, वह मानव जीवन को सब कुछ बनाना चाहता है। लोग अभी उन ग़गन चुंबी इमारतों की ओर जिनका उन्होंने निर्माण किया है, दृष्टि करते हैं (उत्पत्ति 11:4) और अपनी सफलता पर फूला नहीं समाते हैं। वे कहते हैं, "हमारे गगन चुंबी इमारत, तेल का टैंकर, अंतरिक्ष यान, पाइप लाइन, सड़क और पुल देखो। हम कितने अदभुत मानव जाति हैं। ऐसी कोई भी चीज नहीं है जिसको हम नहीं बना सकते हैं।"

मनुष्य स्वयं अपना ईश्वर बनाते हैं। जो मनुष्यों की उपलब्धियों पर घमण्ड करते हैं, हमें उन लोगों को स्मरण दिलाना होगा कि कुछ चीजें ऐसी भी है जो मनुष्य नहीं कर सकता है। हम एक दूसरे का हत्या नहीं रोक पा रहे हैं। युद्ध अभी थमा नहीं है। घृणा गलियों और घरों में कार्य कर रहा है। बच्चों का झुकाव मादक द्रव्यों की ओर है। पति और पत्नी एक साथ मिलकर भी अपने जीवन को संवारने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं जुटा पा रहे हैं। इसके अलावा अनेकों ऐसी सच्चाइयां है जो कभी भी हमारे जीवन से नहीं हटती हैः एक पुराने भजन के शब्दों में, "हम एक-एक करके घाटी में गिरते जा रहे हैं।"[12] मृत्यु उन लोगों पर भी आती है जो यह दावा करते हैं कि वे सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में पतरस की चेतावनी को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। आकाश और पृथ्वी, मानव जाति की सभी महिमा और धूमधाम, एक दिन नष्ट हो जाएगा। परमेश्वर इस पृथ्वी को अंत की ओर ले जा रहा है। बुद्धिमान स्त्री और पुरुषों का कर्तव्य यह है कि वे एक भक्तिमय जीएं। पतरस ने घोषणा की, "जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए" (2 पतरस 3:11)।

उपसंहारः पतरस का चेतावनी कठोर था, परंतु उसी समय उसने आशा को भी थामे रखा। उसने अपने लोगों को बताया कि जब इस संसार का अंत होगा तो परमेश्वर एक नये आकाश और नई पृथ्वी की रचना करेगा। जिसमें धार्मिकता वास करेगी (2 पतरस 3:13)। न तो पतरस ने और न ही नये नियम के किसी अन्य लेखकों ने लोगों को अनावश्यक आकलन करने के लिए उत्साहित किया है कि नया आकाश और नई पृथ्वी कैसे दिखेगी। हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह अपने लोगों के लिए ऐसा उपाय करेगा।

"प्रतिज्ञा कहाँ गई?" (3:4)

मसीही विश्वास के आरंभिक दिनों से ही संशयवादी विश्वासियों को प्रभु के आगमन के बारे में ताने मारते आए हैं। वे कहते हैं, "तुम इस आशा को क्यों नहीं छोड़ देते हो?" सदियों से मसीहियों ने इस आशा को जगाए रखा है। द्वितीय सदी

के मध्य में लिखित एक संदेश अभी भी जीवंत है। इसका शीर्षक "2 क्लेमेंट" है यद्यपि हमें नहीं पता यह किसने लिखा था। यह एक अच्छा लिखा दस्तावेज है। यह अन्य बातों के मध्य, प्रभु के आगमन में देरी की व्याख्या करता है। यह इस प्रकार लिखा हुआ है,

> दुचिता लोगों की स्थिति दयनीय है जो अपने मनों में संदेह करते हैं, जो यह कहते हैं, इन बातों को हमने बहुत पहले, हमारे बाप-दादों के समय से सुना था और दिन प्रतिदिन इसकी प्रतीक्षा की है और हमने इनमें से कुछ भी होते हुए नहीं देखा है। ओह, मूर्ख लोगो! अपनी तुलना पेड़ों से करें। दाखलता को ही ले लो; पहले यह अपनी पत्तियां झाड़ता है, तब उसके बाद उसमें कलियां निकलती है, उसके पश्चात् कच्चे अंगूर, तब पूरा गुच्छा निकलता है। उसी तरह मेरे लोगों को कोलाहल और दुःखों का सामना करना पड़ा; उसके पश्चात् उन्हें अच्छी वस्तु मिलेगी। इसलिए, मेरे भाइयों, हम दुचिता न हों, परंतु आशा धरने में धीरजवान हों, ताकि हमें भी प्रतिफल मिल सके।[13]

चाहे पतरस का समय हो, या क्लेमेंट का, या समकालीन पीढ़ी, संदेह करने की परीक्षा या प्रभु के आगमन की बातों को रद्द करने की परीक्षा, हमेशा लोगों के सम्मुख बनी रही है। फिर भी, प्रभु के आगमन की प्रतिज्ञा और उस दिन की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति, मसीही संदेश के अति निकट है। वह एक बार सेवक के रूप में नासरत नगर में आया था; वह दोबारा प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा होकर आएगा। ऐसा ही हो। आमीन।

जीवन को परिप्रेक्ष्य में रखना (3:8-10)

जब पतरस ने अपने पाठकों को परमेश्वर का धीरज धरने के बारे में स्मरण दिलाया, जब उसने यह बताया कि परमेश्वर चाहता है कि सबको मन फिराव का अवसर मिले, तो यह जीवन की संक्षिप्तता और मृत्यु की निश्चितता का एक अनुस्मारक था। यीशु मसीह में, परमेश्वर मानवजाति का उद्धार करने और उन्हें अनंत जीवन देने के लिए आया। पौलुस का समकालीन, सेनेका एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और स्तोइक दर्शन शास्त्री था। वह रोम में रहता था। जहाँ तक हम जानते हैं, उसका मसीही संदेश से कोई नाता नहीं था। फिर भी, सेनेका ने मूर्तिपूजकों के दृष्टिकोण से, उसने भी जब जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता है, जीवन के विरोधाभास संघर्ष पर रोशनी डाली।

> अपनी जीवन को निर्धारित करना कितनी बड़ी मूर्खता है, जबकि वह कल का स्वामी भी नहीं है! ओह हमसे न पकड़ी जाने वाली आशा को सींचना कितना बड़ा पागलपन है! यह कहनाः "मैं खरीदूँगा और निर्माण करूँगा, धन का लेन देन करूँगा, सम्मान प्राप्त करूँगा, और तब, बूढ़े होने पर मैं आरामदायक जीवन जीऊंगा।" मेरा विश्वास करें जब मैं यह कहता हूँ कि सब कुछ संदेहास्पद है, यहाँ तक कि उनके लिए भी जो सर्वसम्पन्न हैं। किसी को भी भविष्य में स्वयं को आकर्षित करने का कोई अधिकार नहीं है।...हम दूर देश की यात्रा करने

की योजना बनाते हैं और विदेशी समुद्र तटों पर अधिक समय व्यतीत करने के लिए अपने योजनाओं में परिवर्तन करते रहते हैं...और उसके पश्चात् मृत्यु हमारे द्वार पर खड़ी रहती है।[14]

सेनेका के शब्दों में निराशा है। जब कोई उसे पढ़ता है तो वह उस पर तरस खाता है। पतरस के लिए, और जो उसके वचन पर विश्वास करते हैं और जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए उसने घोषणा की कि यह जीवन है जो हमारी ओर खड़ा रहता है न कि मृत्यु। नया आकाश और नई पृथ्वी है जिसमें धार्मिकता वास करती है।

द्वितीय आगमन और नैतिकता (3:11-13)

मसीहियों के लिए यह पर्याप्त आदर्श होगा कि वे परमेश्वर के आज्ञाकारी बने रहें और यीशु मसीह की सेवा करें क्योंकि उनके लिए यही उचित कार्य है। यह पर्याप्त है कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है। यह पर्याप्त है कि उसने यीशु नासरी के द्वारा अपना प्रेम हमें दिखाया है। हम उसकी आज्ञा किसी और कारण से नहीं बल्कि उसकी प्रभुता के कारण मानें। अब न्याय और अनंतता के बारे में स्मरण दिलाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

यह शरीर की दृढ़ इच्छा शक्ति के लिए छूट है कि परमेश्वर, गाजर और छड़ी लेकर भक्तिमय जीवन जीने की मांग करता है। एक ओर परमेश्वर प्रेम है। मसीही लोग परमेश्वर की आज्ञा इसलिए मानते हैं क्योंकि वह एक प्रेमी पिता है। दूसरी ओर, परमेश्वर एक जलती हुई आग भी है। वह न्यायाधीश है। यह परमेश्वर के बारे में एक धूमिल चित्र प्रस्तुत करना है कि जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर आसमान में एक बड़ा सा दानव सरीखा है जो हाथों में बड़ी छड़ियां लिए हुए पापियों पर टूट पड़ने पर है। यूहन्ना ने विश्वासियों को ऐसी विचारधारा से अलग रहने के लिए प्रोत्साहित किया, जब उसने कहा, "सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" (1 यूहन्ना 4:18)। फिर भी, मसीहियों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में परमेश्वर का भय नहीं हटना चाहिए। पाप के प्रलोभन के सम्मुख ठहरकर सोचने का एक समय है और यह स्मरण करना है कि जो कुछ भी हम करते हैं परमेश्वर उसके लिए हमको जिम्मेदार ठहराता है। पुराने और नये नियम के संत लोगों को स्मरण दिलाने में नहीं हिचकिचाए कि परमेश्वर न्यायाधीश है। उस परंपरा में, पतरस ने प्रभु के पुनरागमन और अंतिम न्याय की ओर संकेत किया। जबकि मसीह एक न्यायाधीश के रूप में लौटेगा, पतरस ने मसीहियों को स्मरण दिलाया कि यह उनके लिए आवश्यक है कि वे पवित्र जीवन जीएं।

समाप्ति नोट्स

[1]डोनाल्ड गथरी, *न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी* (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 978. [2]प्रेरितों (6:2) की पुस्तक में केवल एक बार प्रेरितों को "बारहो" करके संबोधित किया गया है और पौलुस ने भी एक ही बार उन्हें "बारहो" संबोधित किया है (1 कुरिंथियों 15:5)।

जब कि औपचारिक रूप से पौलुस "बारहों" में से एक नहीं है, लेकिन पौलुस को एक प्रेरित का सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त था (गलातियों 1:1). [3]माइकल ग्रीन, *द सेकंड इपिस्टल ऑफ़ पीटर एंड द जनरल इपिस्टल ऑफ़ ज्यूड*, संशोधित संस्करण, टिंडेल न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री, खण्ड 18 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1987), 138. [4]देखें एवरेट्ट फरगूसन, *बैकग्राउंड ऑफ़ अर्ली क्रिश्चियनिटी*, द्वितीय संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 232. [5]जॉन आर. क्लेमेंट्स, "इन द लैंड आफ फैथलेस डे," *सांग्स ऑफ़ द चर्च*, संकलन और संपादनकर्ता आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरोः हॉवर्ड पब्लिशिंग कम्पनी, 1977). [6]आयरेनियुस *अगेंस्ट हेरेसीज* 5.28.3. [7]रिचार्ड जे. बॉखम, *ज्यूड, 2 पीटर*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 50 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1983), 312. [8]चार्ल्स एच. एच. स्कोबी, *द वेयज ऑफ़ अवर गॉडः एन अप्रोच टू बिब्लिकल थियोलॉजी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2003), 741. [9]रॉबर्ट डेविडसन, "सम आस्पेक्ट ऑफ़ दि ओल्ड टेस्टामेंट कॉंट्रीब्यूशन टू द पैटर्न ऑफ़ क्रिश्चयन एथिक्स," *स्कॉटिश जॉर्नल ऑफ़ थियोलॉजी* 12 (दिसंबर 1959): 376. [10]इस आयत, 2 पतरस 3:14 में, प्रेरित ने 1 पतरस 1:19 के भांति नहीं बल्कि ἄμωμος *(अमोमोस)* के बजाय ἀμώμητος (*अमोमेटोस*, निर्दोष या निष्कलंक) शब्द का प्रयोग किया है, जहाँ उसने यह उल्लेख किया है कि यीशु एक निष्कलंक मेमना था। शब्द एक दूसरे के बहुत निकट है और इनका लगभग एक ही अर्थ है।

[11]*शेफर्ड ऑफ़ हरमासः सिमिलीट्यूड्स* 9.14.4. [12]जेस्सी ब्राउन पाउंड्स, "वी आर गोइंग डाउन द वैली," *सोंग्स ऑफ़ द चर्च*, संकलित और सम्पादित एलटन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लास एंजेलोसः हवार्ड पब्लिशिंग कंपनी, 1977). [13]*2 क्लेमेंट* 11.2-5. [14]सेनेका *इपिस्टल्स* 101.